प्रतिनिधि साहित्य-माला

प्रतिनिधि सामूहिक-गान

सम्पादक

योगेन्द्रकुमार लल्ला

श्रीकृष्ण
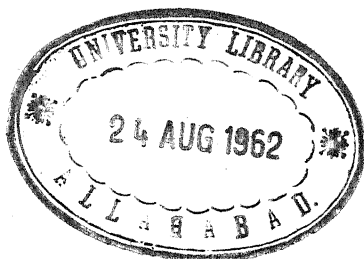
आत्माराम एण्ड संस

दिल्ली . नई दिल्ली . जयपुर . जालन्धर . चण्डीगढ़ . मेरठ

PRATINIDHI SAMUHIK GAN

(Representative Action Songs)

Edited by
Yogendra Kumar Lalla : Shri Krishan

Rs. 4.00

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण : १९६२
मूल्य : चार रुपए

मुद्रक
सत्यपाल धवन
दि सैन्ट्रल इलैक्ट्रिक प्रेस
कमलानगर, दिल्ली-६

भूमिका

भारत के स्वतन्त्र होने पर आज हम राष्ट्र के नव-निर्माण में लगे हुए हैं, परन्तु इसके लिए आवश्यकता है कि हम मिल-जुलकर कठोर परिश्रम करें और अपनी सभी रचनात्मक शक्तियों को पुर्ननिर्माण की दिशा में मोड़ दें। परिश्रम हँसते-गाते किया जाए तो थकान अनुभव नहीं होती। इसलिए आज के युग में सामूहिक गीतों की विशेष महत्ता है !

हिन्दी जन-साधारण की भाषा है। इसमें ऐसे गीतों का बड़ा अभाव है जो सामूहिक रूप से गाये जा सकें और सामुदायिक विकास के लिए स्वस्थ एवं प्रेरणादायक पृष्ठभूमि तैयार करें। प्रस्तुत संग्रह में ऐसे ही सरल और सरस गीत हैं जिनमें नव-निर्माण के स्वर मुखरित और गुँजित हुए हैं। ये गीत जन-जन में एक नई चेतना एवं स्फूर्ति भरेंगे; और सुख-वैभव तथा शान्ति के उज्जवल प्रभात का आशामय प्रकाश चारों ओर फैलायेंगे। सामूहिक गीतों का इतना बड़ा और श्रेष्ठ संकलन आज तक प्रकाशित नहीं हुआ।

संग्रह में जहाँ अनेक सुप्रसिद्ध कवियों और गीतकारों की रचनाएँ हैं वहाँ नए लेखकों की श्रेष्ठ रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक सभी विकास-खण्डों, ग्राम-पंचायतों, समाज-शिक्षा-केन्द्रों, स्कूलों, ग्राम-सेवकों और पुस्तकालयों के लिए आवश्यक और अनिवार्य बन गई है। आर्थिक स्वतन्त्रता के इस संघर्षमय युग में प्रत्येक भारतवासी एक सिपाही है और प्रत्येक सैनिक को ओज-भरे गीतों की यह पुस्तक अपने पास रखनी ही चाहिए !

—सम्पादक

क्रम

○

○

वन्दे मातरम् !

(बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय)

वन्दे मातरम् !

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम् !

वन्दे मातरम् !

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित - द्रुमदल - शोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् !

वन्दे मातरम् !

स्वाधीनते !

पं० गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'

जयति जय स्वाधीनते जय !

अचल केन्द्र समक्षकारिणी ?
चल परिधि कृत भ्रमण वारिणी ।
वृत्तगत संयत विहारिणी ।
ज्योतिधाम अदीनते जय !
जयति जय०

तप-अहिंसा रति-विलासिनी ।
प्रकृत हिंसा गति विकासिनी ।
विकृति से व्यथिता प्रवासिनी ।
सत्य-शक्ति-विलीनते जय !
जयति जय०

परस पारस पास लाओ ।
लोह की जड़ता नसाओ ।
कनक चेतनता सजाओ ।
देवि हों हम अजर अक्षय !
जयति जय०

राष्ट्र-ध्वजा

(हरिवंशराय 'बच्चन')

नगाधिराज शृंग पर खड़ी हुई,
समुद्र की तरंग पर अड़ी हुई,
स्वदेश में सभी जगह गड़ी हुई,
अटल ध्वजा
हरी, सफेद,
केसरी।

न साम-दाम के समक्ष यह रुकी,
न दंड-भेद के समक्ष यह झुकी,
सगर्व आज शत्रु-शीश पर ठुकी,
विजय-ध्वजा
हरी, सफेद,
केसरी।

चलो उसे सलाम आज सब करें,
चलो उसे प्रणाम आज सब करें,
अजर सदा, इसे लिए हुए जिए,
अमर सदा, इसे लिए हुए मरे,
अजय ध्वजा
हरी, सफेद,
केसरी।

बढ़े चलो ! बढ़े चलो !

(सोहनलाल द्विवेदी)

न हाथ एक शस्त्र हो,
न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

रहे समक्ष हिमशिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूंट हो,
जिये चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
अड़ो वहीं,
गड़ो वहीं,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

चलो नई मिसाल हो,
जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो,
रुको नहीं,
झुको नहीं,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

अशेष रक्त तोल दो,
स्वतन्त्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो,
डरो नहीं,
मरो वहीं,
बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

मिल-जुलकर हमको करनी है
रचना नये समाज की।

(ललित गोस्वामी)

हमें हटानी है सुख पर से चिन्ता की परछाइयाँ,
महा भयंकर जो घावों-सी, भरनी हैं वे खाइयाँ,
सहन नहीं कर सकती इनको सुधरी दुनिया आज की ।।
रचना नए समाज की ।।

हमें जन्म देना है अब तो एक नये इंसान को,
जो बढ़कर दे सके चुनौती जंग-खोर शैतान को,
शान्ति-मंत्र दे—गति हरनी है विकट ऐटमी गाज की ।।
रचना नए समाज की ।।

शंखनाद हमको करना है घर-घर में सहकार का,
पूज्य बनाना है कण-कण में एक देवता प्यार का,
फिर तस्वीर खींचनी है आदर्श राम के राज की ।।
रचना नए समाज की ।।

ऐसा नया समाज कि जिसमें जन-जन का कल्याण हो,
स्वाभाविक हो त्याग, तपस्या, सहज आत्म-बलिदान हो,
दुनिया-भर में दमकें मणियाँ भारत के सिरताज की ।।
रचना नए समाज की ।।

आज हम जवान हैं

(रामकुमार चतुर्वेदी)

आज हम जवान हैं, देश भी जवान है,
सत्य की कमान पर प्राण प्राणवाण है !

इन्कलाब ध्येय है,
और दमन प्रेय है,
वीर-मृत्यु श्रेय है !

बीत रही है निशा, काँप रही है दिशा,
आज तो समय-समुद्र में उठा उफान है !

पंछियों का गीत है,
रागिनी पुनीत है !
हार नहीं, जीत है !

फूल-फूल खिल रहा, पात-पात हिल रहा,
आज व्योम-कुँज से झाँकता विहान है !

तीन रंग की ध्वजा,
शत्रु को बनी कज़ा !
शंख युद्ध का बजा !

संगठन अटूट है, द्वेष है न फूट है !
आज मुक्ति-दीप में रक्त-स्नेह-दान है !

हम कहीं नहीं रुके,

हम कभी नहीं झुके,

युद्ध से नहीं थके,

रक्त कहो रक्त दें, चाम कहो चाम दें,

मातृभूमि आन है, मातृभूमि शान है !
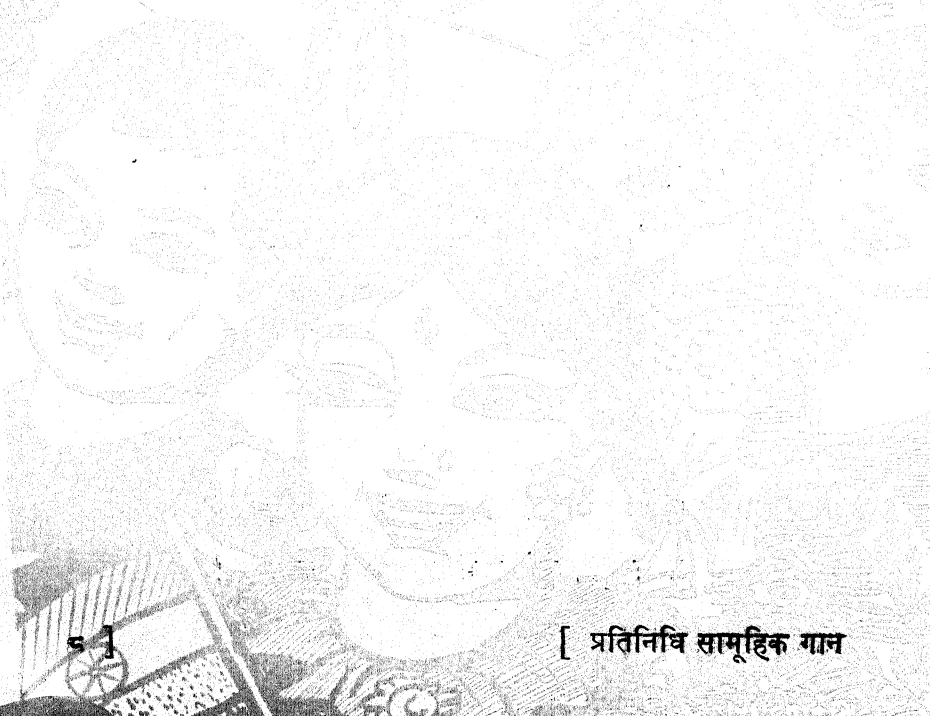
आशा का संगीत लो !

(परमेश्वर द्विरेफ)

बढ़ो, बढ़ो, जीवन-सागर में इन लहरों को जीत लो !

झुको नहीं, भयभीत न होओ,
प्रलयंकर तूफान से,
ऊँचे-ऊँचे शीश अड़ा दो,
अम्बर में अभिमान से,

पतवारें हाथों में पकड़ो, नौका कर विपरीत लो !
बढ़ो, बढ़ो, जीवन-सागर में इन लहरों को जीत लो !

प्राणों के पंखों को भर लो,
श्रद्धा से, विश्वास से,
नयनों को टकराने मत दो,
उस नीले आकाश से,

सूने में, एकाकीपन में आशा का संगीत लो !
बढ़ो, बढ़ो, जीवन-सागर में इन लहरों को जीत लो !

अपने बल पर सत्य बना लो,
स्वप्न सभी उस पार के,
इन चरणों में घुल जायेंगे,
लोचन नत संसार के,

पद-चिह्नों पर चलने वाली, दुनिया की यह रीत लो !
बढ़ो, बढ़ो, जीवन-सागर में इन लहरों को जीत लो !

अवसर की पहचान करो मत,
झट पालों को तान दो,
उस भविष्य की चिन्ता क्यों हो ?
वर्तमान पर ध्यान दो,
छाने मत दो कुछ अतीत को, काल न जाये बीत, लो !
बढ़ो, बढ़ो, जीवन-सागर में इन लहरों को जीत लो !
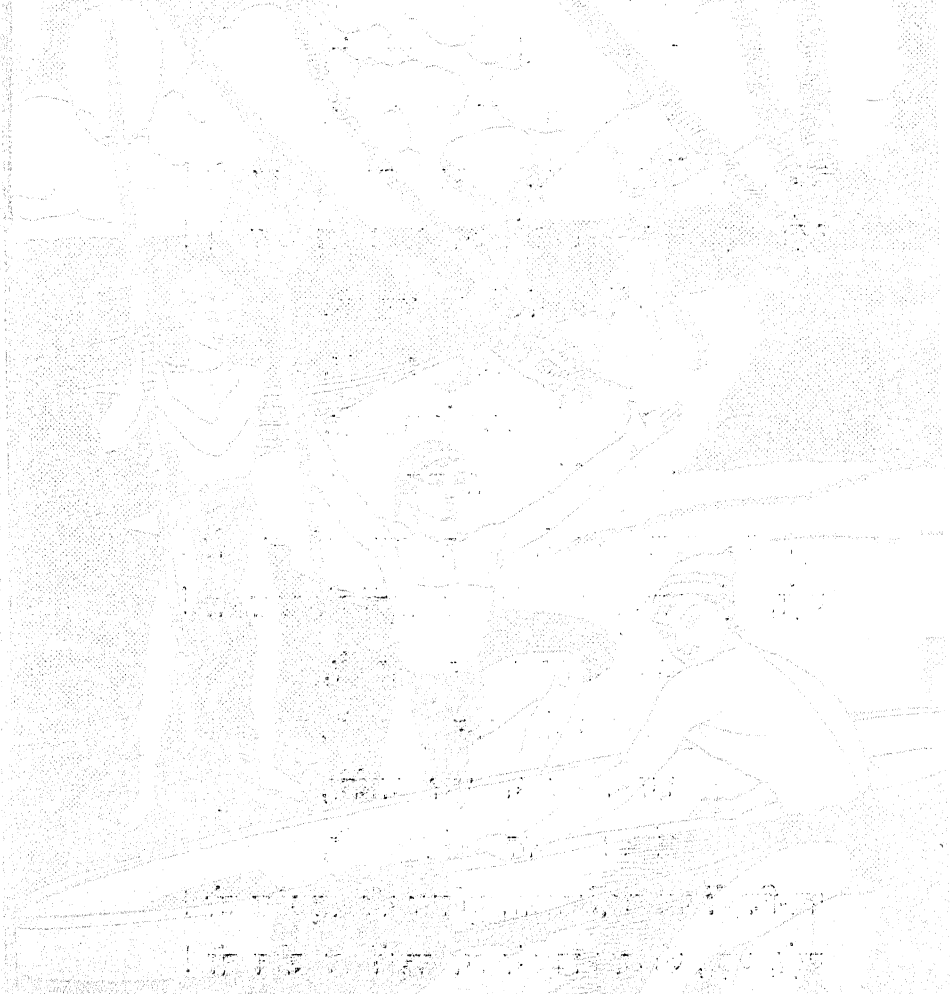
कदम आगे बढ़ाता चल

(हरिकृष्ण देवसरे)

न डर भीषण दहाड़ों से,
न डर झंखाड़ झाड़ों से,
न डर दुर्गम पहाड़ों से,
अथक से,
शक्ति से,
श्रम से,

शिलाओं को हटाता चल,
सुगम पथ को बनाता चल।

न डर तूफान आने दे,
न डर पग लड़खड़ाने दे।
न डर घनघोर छाने दे,
चमक से,
तेज से,
लौ से,

तिमिर को जगमगाता चल,
सुगम पथ को बनाता चल।

न डर कस ले कमर अपनी,
न डर गति तेज कर अपनी।
नजर रख लक्ष्य पर अपनी,
गरज से,
शोर से,
रव से,

गगन-मण्डल हिलाता चल,
सुगम पथ को बनाता चल।

न डर उल्लास लेकर बढ़,
न डर मृदु हास लेकर बढ़।
न डर विश्वास लेकर बढ़,
हृदय से,
कंठ से,
स्वर से,
विजय के गीत गाता चल,
सुगम पथ को बनाता चल।

निर्माणों के गीत लिखूँगा-मैं भारत के भाल पर !

(रमाकान्त शर्मा)

निर्माणों के गीत लिखूँगा—मैं भारत के भाल पर !
मिट्टी तक कुमकुम कर दूँगा—आने वाले साल पर !
मेरे गीत किसानों के हैं, कृषि ही जिनका काम है।
मैंने श्रमिकों को पूजा है, यही कृष्ण और राम हैं।
मेरा मन्दिर मेरी मस्जिद, खेत और खलियान है।
जो धरती पर बोझ बना तो, वह भी क्या इन्सान है।

आँसू तक हँसने आयेंगे,
कल धरती के हाल पर।
मिट्टी तक कुमकुम······

यह है मेरा देश कि इसके जन-जन पर विश्वास है।
संघर्षों से जूझ रहा नित, श्रम इसका इतिहास है।
यहीं भाखरा औ' नांगल जो जीवन का आधार है।
चम्बल की धरती में जागा इस धरती का प्यार है।

जीवन का संगीत मुखर हो,
नदी, नहर के पाल पर।
मिट्टी तक कुमकुम······

यहाँ कारखानों का देखो, बिछा देश में जाल है।
कृषि में वैज्ञानिक साधन से, धरती मालामाल है।
मुझे हुए जो दीप जलेंगे, हर देहरी और द्वार पर।
महलों को भी गर्व न होगा—सोने के संसार पर।

सत्य अहिंसा की बिंदिया दूँ,
भारत माँ के भाल पर।
मिट्टी तक कुमकुम······

एक साथ मिल जाना होगा—समय कहाँ जो सोचना ?
सुख के द्वारों को खोलेगी, नव विकास की योजना ।
कली-कली इस उपवन की सुख-सुरभि फैलायेगी ।
उन्नति के ऊँचे शिखरों पर बैठ मनुजता गायेगी ।

मंजिल राहों को चूमेगी,
कदम-कदम के हाल पर ।
मिट्टी तक कुमकुम······

ग्राम-ग्राम हो स्कूल और फिर पंचायत का राज हो ।
अस्पताल, सुन्दर सड़कें हों, नव विकास का साज हो ।
ऊँच-नीच का भेद नहीं हो, समता का आधार हो ।
भक्त और भगवान् पास हो—वह मन्दिर का द्वार हो ।

जीवन-स्तर ऊँचा उठ जाये,
सपने नर-कंकाल के ।
मिट्टी तक कुमकुम······

 [–प्रतिनिधि सामूहिक गान

प्रयाण-गीत

(गजानन वर्मा)

आँधी औ' तूफान,
चले, इन्सान न रुकना तू।
मजूर किसान न झुकना तू।

चमक रही बिजली,
गरज रहे बादल,
पथ की काली रात रोक रही पल-पल,
कल का नया सबेरा तेरी बदलेगा हर शाम।

आज नहीं नभ में चमक रहे तारे,
धरती का कण-कण सोया मन मारे,
झंझा की हर लहर-लहर में छेड़ निराली तान!

चलो गाँव की ओर,
बढ़ो शहर की छोर,
लूट रहे धरती को अंधकार के चोर,
अमर राग में आज सुना दे नवजीवन के गान।

आँधी औ' तूफान,
चले, इन्सान न रुकना तू।
मजूर किसान न झुकना तू।

जोर लगाओ !

जोर लगाओ हैया हो !
आगे आओ हैया हो !
बढ़ते जाओ हैया हो !

नयी सुबह की बेला है,
नव सपनों का मेला है,
लाखों ही जब चलते हैं,
उनमें कौन अकेला है ?

आज पसीना बहता है,
जिसमें जीवन रहता है,
बीते कल को भूलो, आने—
वाला कल क्या कहता है !

जोर लगाओ हैया हो !
आगे आओ हैया हो !
बढ़ते जाओ हैया हो !

तपकर सोना बनता है—
माटी में जो सनता है,
मंजिल आगे होती है,
पीछे होती जनता है।

ताजमहल उग आते हैं,
और कुतुब बन जाते हैं,
दीवारें चीनी उठतीं—
*बरो बुदर उठ आते हैं !

* इण्डोनेशिया का विश्व-प्रसिद्ध बौद्ध-मन्दिर।

जोर लगाओ हैया हो !
आगे आओ हैया हो !
बढ़ते जाओ हैया हो !

नयी जोत सुलगाओ तुम,
बढ़कर आगे आओ तुम,
बाधा को रौंदते हुए,
आगे बढ़ते जाओ तुम,

खुशहाली ले थाल खड़ी,
किस्मत ले जय-माल खड़ी,
नयी योजना की देवी—
नूतन सिद्धि सँभाल खड़ी

जोर लगाओ हैया हो !
आगे आओ हैया हो !
बढ़ते जाओ हैया हो !

—विश्वदेव शर्मा

प्रयाण-गीत

(राजनारायण बिसारिया)

उठो कि नींद छोड़ दो,
रुकावटों को तोड़ दो,
अबाध बाँध बाँधकर,
रवानियों को मोड़ दो !

समाज टूट-सा रहा,
चलो कि जोड़ते चलो !
नयी डगर, नया सफर,
बढ़े चलो, बढ़े चलो ! !

हरेक खेत झूम ले,
नहर सभी को चूम ले,
छलक छपाक जल बहे,
कि पौध-पौध घूम ले !

जल-प्रदीप जल उठें,
जगर-मगर, नगर-डगर,
जल-प्रवाह से अटूट,
ज्योति को गढ़े चलो !
बढ़े चलो, बढ़े चलो ! !

चरण कभी रुकें नहीं, नयन कभी झुकें नहीं,
अथक परिश्रमों के दिन ढलें नहीं, चुके नहीं !
नवें न हम किसी के सामने किसी भी बात पर,
कि श्रम-सुवर्ण से स्वदेश का मुकुट मढ़े चलो !

बढ़े चलो, बढ़े चलो ! !

लो, हाथों से काम लो !

(रघुवीरशरण 'मित्र')

जीवन का उपयोग हो,
कहीं न कोई रोग हो।
शशि चाँदी से तोल लो,
रवि सोने के मोल लो।
नभ को झुका प्रणाम लो !
लो, हाथों से काम लो !

सागर मथो निचोड़ दो !
पर्वत का दिल फोड़ दो !
फूटी किस्मत जोड़ दो !
सबको पीछे छोड़ दो !
लो, जीवन के दाम लो !
लो, हाथों से काम लो !

जग को नई बहार दो !
युग को नया सितार दो !
दो, दुश्मन को हार दो !
दो, प्यासे को धार दो !
हर गिरते को थाम लो !
लो, हाथों से काम लो !

हँसते फूलों-से खिलो।
जलते दीपों-से मिलो !
भाग्य तुम्हारे हाथ है,
धरा तुम्हारे साथ है !

श्रम के दामों नाम लो !
लो, हाथों से काम लो !

अमृत निचोड़ो रेत से,
मोती ले लो खेत से !
ज्योति खींच लो नीर से,
धरा धन्य है वीर से !
मत सोने का नाम लो !
लो, हाथों से काम लो !

धरती को उत्थान दो !
दो, मनुष्य को दान दो !
बोओ, जोतो, काट लो।
सब मिल-जुलकर बाँट लो !
काम करो आराम लो !
लो, हाथों से काम लो !

तुम समय के रेत पर...

(सरस्वतीकुमार 'दीपक')

तुम समय के रेत पर, छोड़ते चलो निशां।
देखती तुम्हें जमीं, देखता है आसमां।
तुम समय के रेत पर......

लिखते चलो नौनिहाल ! नित नई कहानियाँ,
तुम मिटा दो ठोकरों से जुल्म की निशानियाँ,
कल की तुम मशाल हो,
सबसे बेमिसाल हो,
तिनके-तिनके को बना दो, जिन्दगी का आशियाँ।
तुम समय के रेत पर......

ये निशान, एक दिन जहान का अमन बनें,
ये निशान, एक दिन प्रीत का चमन बनें,
हँसते हुए हमसफर,
गाते चलें, हो निडर,
आगे-आगे बढ़ता चले, जिन्दगी का कारवाँ।
तुम समय के रेत पर......

तुम जिधर चलो, उधर ही रास्ता बने नया,
इक उठाये सबका बोझ, वक्त वह चला गया,
सब कमायें साथ-साथ,
काम करें, सबके हाथ,
जो भी आगे बढ़ रहा है, देखता उसे जहाँ।
तुम समय के रेत पर......

प्रयाण गीत

(हरिकृष्ण 'प्रेमी')

स्वतन्त्र देश के युवक,
समृद्ध देश को करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

महान कामना करो,
महान साधना करो।
महान देश के युवक,
न कष्ट से कभी डरो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

स्वतन्त्र देश के युवक,
समृद्ध देश को करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

नवीन भावना लिए,
नवीन चेतना लिए।
अटूट धैर्य की सुधा,
पिये, कदम सबल धरो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

स्वतन्त्र देश के युवक,
समृद्ध देश को करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

प्रदीप ज्ञान का जला,
करे प्रयाण काफिला।
प्रखर प्रकाश से दिशा—
दिशा जहान की भरो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

स्वतन्त्र देश के युवक,
समृद्ध देश को करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

लक्ष-प्राप्ति के लिए,
सुदृढ़ अटूट प्रण किए।
जियो स्वदेश के लिए,
स्वदेश के लिए मरो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

स्वतन्त्र देश के युवक,
समृद्ध देश को करो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो !

आजादों का गीत

(हरिवंशराय 'बच्चन')

: १ :

हम ऐसे आजाद, हमारा,
झंडा है बादल।

चाँदी, सोने, हीरे, मोती
से सजतीं गुड़ियाँ।
इनसे आतंकित करने की,
बीत गई घड़ियाँ।

इनसे सज-धज बैठा करते।
जो, हैं कठपुतले।
हमने तोड़ अभी फेंकी हैं,
बेड़ी-हथकड़ियाँ !

परम्परा पुरखों की हमने,
जाग्रत की फिर से।
उठा शीश पर हमने रक्खा,
हिम-किरीट उज्ज्वल।
हम ऐसे आजाद, हमारा
झंडा है बादल।

: २ :

चाँदी, सोने, हीरे, मोती
से सज सिंहासन।
जो बैठा करते थे उनका,
खत्म हुआ शासन।

उनका वह सामान अजायब-
घर की अब शोभा।
उनका वह अभिमान महज
इतिहासों का वर्णन।
नहीं जिसे छू कभी सकेंगे,
शाह लुटेरे भी।
तख्त हमारा भारत माँ की,
गोदी का शाद्वल।
हम ऐसे आजाद, हमारा
झंडा है बादल।

: ३ :

चाँदी, सोने, हीरे, मोती
से सजवा छाते।
जो अपने सिर पर तनावते,
थे, अब शरमाते।
फूल-कली बरसाने वाली,
दूर गई दुनिया।
वज्रों के वाहन अम्बर में,
निर्भय घहराते।
इन्द्रायुध भी एक बार जो,
हिम्मत से ओढ़ें।
छत्र हमारा निर्मित करते,
साठ कोटि करतल।
हम ऐसे आजाद, हमारा
झंडा है बादल।

: ४ :

चाँदी, सोने, हीरे, मोती
का हाथों में दंड ।
चिह्न कभी का अधिकारों का,
अब केवल पाखंड ।

समझ गई अब सारी जगती,
क्या सिंगार, क्या शक्ति ।
कर्मठ हाथों के अन्दर ही,
बसता तेज प्रचंड ।

जिधर उठेगा महा सृष्टि,
होगी या महा-प्रलय ।
विकल हमारे राज दंड में
साठ कोटि भुजबल ।
हम ऐसे आजाद, हमारा
झंडा है बादल ।

अभियान गीत

(शैलेश मटियानी)

मचलती लहर के अधर चूमता,
उठा शीश, आठों पहर झूमता,
जो तू चले, जो तू बढ़े,
सोया जहाँ खोले नयन, काँपे धरा, डोले गगन ।

गीत तेरे क्रान्ति-बोल बोलते चलें,
प्रीति-रंग प्राण-प्राण घोलते चलें,
तेरे लगन की चरण-धूलि ओढ़ शीश पर,
धूप-छाँव संग-संग डोलते चलें ।
प्रचण्ड-सूर्य-किरन-किरन-तूर्य-नाद ले,
लहर-लहर-गूँजता-निर्झर-निनाद ले,
जो तू चले, जो तू बढ़े,
सोया जहाँ खोले नयन, काँपे धरा, डोले गगन ।

पखारती चरन तेरे हिलोर गंग की,
ललाट बिंदिया है, रे, हिमाल-शृंग की,
तेरी लगन के झनझनाते तार-तार में,
गूँजती है तान, रे, विभोर भृंग की ।
कोटि-कोटि ज्वलित दीप-ज्योति-धार ले,
नया रूप, नया रंग, नया प्यार ले,
जो तू चले, जो तू बढ़े,
सोया जहाँ खोले नयन, काँपे धरा, डोले गगन ।

मेहनतकश इंसान

(मदनमोहन परिहार)

नहीं पुजेगी शान-बान अब, धन-बल पर धनवान की,
पूजा होगी अब धरती पर, मेहनतकश इंसान की।

माटी का जो सोना कर दे, अपने खून-पसीने से,
डालों पर जो मोती जड़ दे, अपने प्राण-नगीने से,
जिसने ढो-ढोकर के पत्थर, पानी पर दीवार बनाई,
जिसने खो-खोकर के यौवन, मरुस्थलों में नहर बनाई,
वही अन्नदाता धरती का, जय उसके बलिदान की।
पूजा होगी अब धरती पर, मेहनतकश इंसान की॥

मोड़-मोड़ इस्पातों को, पुर्जे-औजार बनाता है,
जोड़-जोड़ पुर्जे-पुर्जे को, नई मशीन सजाता है,
खोद-खोद ऊजड़ धरती, उर्वर उद्यान उगाता है,
तोड़-तोड़ पर्वत-टीले, समतल मैदान बनाता है,
चुका नहीं सकता है जग, कीमत तेरे एहसान की।
पूजा होगी अब धरती पर, मेहनतकश इंसान की॥

कारोबार खड़ा है जग का, तेरे ही इन पाँवों पर,
निर्माणों की हलचल चलती, तेरी ही इन बाँहों पर,
तेरी मेहनत में मुस्काता, है उत्थान स्वदेश का,
तेरी ताकत में अंगड़ाता, है अभिमान स्वदेश का,
अमर रहेगी इतिहासों में, गाथा इस अभियान की।
पूजा होगी अब धरती पर, मेहनतकश इंसान की॥

सहगान

(आरसीप्रसादसिंह)

धीर धरण, वीर वरण,
धरती के प्रहरी दल,
भारत जय विजय करे,
चल रे चल अभय चरण ।

लहर लहर चल चपल,
किरणों के शर विकल,
सजग सुभग, सदल सबल,
जल रे जल तिमिर हरण ।
चल रे चल अभय चरण ।।

धीर धरण, वीर वरण,
धरती के प्रहरी दल,
भारत जय विजय करे,
चल रे चल अभय चरण ।

नव युग का यह समय,
जन जन का हो उदय,
निर्मम दुर्दमन प्रमन,
ढल रे ढल विजित मरण ।
चल रे चल अभय चरण ।।

धीर धरण, वीर वरण,
धरती के प्रहरी दल,
भारत जय विजय करे,
चल रे चल अभय चरण।

तेरे चरण में झुका माथ है !

(वीरेन्द्र मिश्र)

आकाश जिसकी ध्वजाएँ उड़ाता,
जो है युगों से धरा पर सुहाता।
तू वह आलीशान मन्दिर हमारा,
कण-कण जिसे जोड़ता हाथ है।
तेरे चरण में झुका माथ है॥

१

गोदावरी और गंगा किनारे,
सौगन्ध है एक ही धूल की।
कश्मीर, बंगाल, गुजरात, केरल,
गाथा वही फूल की, शूल की।

बीती हुई बात है अब गुलामी,
इतिहास की ले रहा तू सलामी।
जागे हुई देश की आरती में,
जागी हुई भारती साथ है।
तेरे चरण में झुका माथ है॥

२

हम बोलते जिस समय देश की जय,
आवाज से गूँज जाता गगन।
जैसे समय की नई भैरवी सुन,
खोले नयन नींद वाला चमन।

तेरी उदासी हमारी उदासी,
भारत ! तुझे चाहता देशवासी ।
हर देशवासी कि जो जानता ये,
मिट्टी बड़ी एक सौगात है ।
तेरे चरण में झुका माथ है ।।

३

तू पर्वतों-सी भुजाएँ उठाकर,
हर शीश को एक आशीश दे ।
तेरे दियों को बुझाने उठें जो,
ऐसी सभी आंधियाँ पीस दे।

हमको बता किस जगह क्या करें हम,
किस घाट पर कौन-सा घट भरें हम।
तुझसे हुआ प्यार खुद से हुआ है,
सब कुछ नहीं ये अकस्मात है ।
तेरे चरण में झुका माथ है ।।

नव-विहान

(मनमोहन सरल)

आसमान बोलता,
औ' जहान बोलता,
सुप्त वीर, अब उठो,
नव विहान बोलता !

गिरि-शिखर उछल रहे,
जड़-अचल मचल रहे,
गात, पात, बात में—
आज प्राण भर रहे।

तुम सजीव हो अरे,
चेतना बिसर रहे,
मूक सूर्य प्रात का,
अब जबान खोलता !

नव विहान बोलता !

नवीन वर्ष आ रहा,
नवीन हर्ष ला रहा,
नव उमंग, नव तरंग—
नव प्रसंग छा रहा।

ले नवल प्रणति उठो,
नवोत्कर्ष छा रहा।
निशा निमेष मूंदती,
प्रात नेत्र खोलता।

नव-विहान बोलता !

सिन्धु भी उछल-उछल,
स्निग्ध मन्द बह अनिल,
अदम्य साध भर रहे,
चन्द्र-ज्योत्स्ना नवल ।

नव उषा क्षितिज सजी,
श्वांस भर रही सबल ।
स्तब्ध मत रहो अरे,
गत नवल बना हृदय ।

शौर्य प्राण घोलता !
नव - विहान बोलता !

आह्वान

(सुरेन्द्रकुमार श्रीवास्तव)

उठो जवान देश के स्वतन्त्रता पुकारती ।

नयी धरा, नया गगन,
नया-नया विधान है ।
स्वतन्त्र देश कह रहा,
निशा गयी, विहान है ।
बढ़ो युयुत्सु वीरवर,
न अब कदम रुकें कभी ।
स्वतन्त्र देश के रथी,
कहीं न अब झुकें कभी ।

समग्र सृष्टि सामने युवक तुम्हें निहारती ।
उठो जवान देश के स्वतन्त्रता पुकारती ॥

कदम-कदम बढ़े चलो,
स्वदेश की पुकार पर ।
समय कहे तो वीर तुम,
मचल पड़ो अंगार पर ।
अचल न रोकता कभी
प्रखर नदी की धार को ।
न रोक घोर वन सका
प्रचंड खर बयार को ।

शहीद की समाधि पर विमुक्ति दीप बारती।
उठो जवान देश के स्वतन्त्रता पुकारती॥

विभिन्न देश की कड़ी
पुनः इसे सँवार दो।
जवान, तुम समाज को
जहान को सुधार दो।
नवीन सृष्टि के लिये,
उठो पहाड़ फोड़ दो।
झुका गगन, हिला धरा
कड़ी-कड़ी मरोड़ दो।

कुचक्र से दबी हुई वसुन्धरा पुकारती।
उठो जवान देश के स्वतन्त्रता पुकारती॥

खेतों का शाहंशाह

(शिशुपालसिंह 'शिशु')

पहचानो मिट्टी की गोदी में यह कौन महान है ?
नहीं जानते ? यह खेतों का शाहंशाह किसान है ।

इसके मन की गहराई है मारवाड़ के कूप में,
जीवन की उच्चता बसी है सारनाथ के स्तूप में ;
पलते हैं सिंगार सोलहों इसके श्यामल रूप में,
इसकी फ़सलें सोना पाती हैं सूरज की धूप में ;
वरुण देव इसके खेतों को अम्बर से हैं सींचते,
सही शकल में यही असल में अपना हिन्दुस्तान है ।

पर्णकुटी खेतों पर डाले यह वनवासी राम है,
कन्धे पर हल धारण करके हलधर है, बलराम है ;
भोगों का उपभोग न कर, करता विदेह का काम है,
इसके भीषण श्रम पर मोती बरसाता घनश्याम है ;
डालर-सा डाका न डालता यह दुनिया की हाट में,
इसकी पूँजी, बैंक, तिजौरी जो कुछ है खलिहान है ।

भोला होने के नाते बैलों से करता प्यार है,
सावन में यह नागपंचमी का करता त्योहार है ;
गणनायक है, पर मूषक पर होता नहीं सवार है,
कार्तिकेय होकर मोरों को भी देता आहार है,
लेकिन पशुओं और पंछियों तक सीमित कब दान है,
सम्राटों को रोटी देने वाला यह भगवान है ।

इसके जनक जमीनों से उपजाते हैं वह जानकी,
जो गाहक बन जाती जुल्मी लंकापति के प्राण की;
इसकी गंगोत्री से निकलीं गंगाएँ श्रमदान की,
हँसी-खुशी हंसिया, खुरपी में युग के नये विहान की ;
तेज लोहिया औजारों से लोहा माना भूमि ने,
इसके हल को उदर समस्या हल करने का ज्ञान है ।

नये समाज के लिये

(रामकुमार चतुर्वेदी)

नये समाज के लिये
नया विधान चाहिए।

असंख्य शीश जब कटे—
स्वदेश-शीश तन सका,
अपार रक्त-स्वेद से,
नवीन पंथ बन सका।
नवीन पंथ पर चलो न जीर्ण मन्द चाल से,
नई दिशा, नये कदम, नया प्रयाण चाहिए।

विकास की घड़ी, विकास
हो, नई कलें चलें,
वणिक स्वनामधन्य हों,
नई-नई मिलें चलें।
मगर सुखी वणिक-समाज से प्रथम स्वदेश में,
सुखी मजूर चाहिए, सुखी किसान चाहिए।

विभिन्न धर्म पंथ हैं,
परन्तु एक ध्येय के;
विभिन्न कर्म सूत्र हैं,
परन्तु एक श्रेय के।
मनुष्यता महान धर्म है, महान कर्म है,
हमें इसी पुनीत ज्योति का वितान चाहिए।

हमें न स्वर्ग चाहिए,
न वज्र दंड चाहिए ;
न कूटनीति चाहिए,
न स्वर्ण-खण्ड चाहिए ।

हमें सुबुद्धि चाहिए, विमल प्रकाश चाहिए,
विनीत शक्ति चाहिए, पुनीत ज्ञान चाहिए ।

जहान है, हँसी बनी रहे,
रूदन बना रहे ।
मनुष्य - योनि है,
सहज विरह-मिलन बना रहे ।

धरा धरा बनी रहे, गगन गगन बना रहे,
हमें मनुष्य बस मनुष्य के समान चाहिए ।

अभियान-गीत

(आरसीप्रसादसिंह)

चल, चला चल, चल !
भाई, कदम मिलाकर चल !

भारत की जय बोलकर तू
झूम-झूमकर चल !
भाई, कदम मिलाकर चल !
चल, चला चल, चल !

चल रे सीना तानकर तू देश के अभियान पर,
आजादी की रक्षा के हित जो कुछ है, बलिदान कर !

सारे संकट का श्रम ही बस,
एकमात्र है हल !
चला, चला चल, चल !
भाई, कदम मिलाकर चल !

लक्ष्य दूर हो चाहे जितना, पाँव नहीं मजबूर हैं !
हम सैनिक हैं शूर साहसी, जीवन रस भरपूर हैं !

हम सेवक हैं मानवता के,
सेवा ही है फल !
चल, चला चल, चल !
भाई, कदम मिलाकर चल !

हम रक्खेंगे सदा सुरक्षित मातृ-भूमि की शान को,
जिस मिट्टी में जन्म लिया है, उस मिट्टी की आन को !

साधन है सहयोग हमारा,
ग्रौर एकता बल !
चल, चला चल, चल !
भाई, कदम मिलाकर चल !

भारत की जय बोलकर तू
झूम-झूमकर चल !

श्रम-गान

(विनोद रस्तोगी)

हैया हो हैया !
हैया हो हैया !!

हम मेहनत के दूत हैं,
हैया !
हम धरती के पूत हैं,
हैया !!
ईंट उठाते, हैया !
गारा लाते, हैया !!
हैया हो हैया !!

पूजा अपना काम है,
हैया !
अब आराम हराम है,
हैया !!
स्वेद बहाते, हैया !
फूल खिलाते, हैया !!
हैया हो हैया !!

इस मिट्टी से प्रीत है,
हैया !
श्रम का पावन गीत है,
हैया !!
हँसते-गाते, हैया !
स्वर्ग बसाते, हैया !!
हैया हो हैया !!

जय स्वतन्त्रते !

(भरत व्यास)

स्वतन्त्र है धरा, स्वतन्त्र है गगन
स्वतन्त्र हैं अगन, स्वतन्त्र है पवन ।
स्वतन्त्र तन में आज है स्वतन्त्र मन,
स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र हैं वचन ।

स्वतन्त्रता सिंगार है सँवारती,
स्वतन्त्रता के भाव भरे भारती ।
स्वतन्त्रता स्वदेश को पुकारती,
स्वतन्त्रता की आज करो आरती ।

स्वतन्त्रता के इस मधुर प्रभात में,
स्वतन्त्रता का दीप ले के हाथ में ।
स्वतन्त्रता के थाम लो युगल चरण,
स्वतन्त्रता को झुक के सब करो नमन ।

भारत की जय

(चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र)

स्वाधीन देश की जय बोलो !
बोलो, भारत की जय बोलो !

अपना नभ है, धरती अपनी,
सागर अपना, नैया अपनी,
अपने ही चतुर खिवैया हैं,
झिझको न, उठो, लंगर खोलो !

बिछुड़ों को गले लगाना है,
पिछड़ों को आगे लाना है,
तुम बहक गए तो राष्ट्र—
अभागा किसे पुकारेगा ? बोलो !

ये जाति-पाँति की दीवालें,
ये भेद डालने की चालें,
कल तक न समझ पाए, न सही,
भ्रम छोड़ो, आज समझ तो लो !

श्रम करो कि सब सुख से खाएँ,
सब उचित भाग अपना पाएँ,
घर एक, सभी तुम भाई हो,
मत भेद-भरी भाषा बोलो !

तुम जगे, नया इतिहास जगा,
फिर एक नया विश्वास जगा,
आशा के मधुमय प्याले में,
कटुता का विष-रस मत घोलो !

तुम उठो कि सागर-ज्वार उठे,
तुम बोलो देश पुकार उठे,
निज में स्वदेश को बसा, स्वयं,
कण-कण में प्रतिबिम्बित हो लो !

कंठों में नव हुँकार लिए,
आँखों में नव अंगार लिए,
तुम जिधर फेर दो दृष्टि उधर—
हो द्वार प्रलय का तुम खोलो !

स्वाधीन देश की जय बोलो !
बोलो, भारत की जय बोलो !

संत विनोबा

(कमला चौधरी)

तुम तो सोतों को उठकर जगाने लगे।
क्रान्ति का गीत गाकर सुनाने लगे।

ज्योति बापू की फिर से उठी है चमक,
आज फिर से सुनी उस चरण की धमक,
आज समझा, पढ़ा जो था पहले सबक,
धूलि से क्यों बनाया गया था नमक,

तुम तो मिट्टी को सोना बनाने लगे।
काम बापू का पूरा कराने लगे।

सोने-चाँदी की कीमत है घटने लगी,
महिमा मिट्टी की जग को है दिखने लगी,
यह मशीनों का युग तो चलेगा नहीं,
अर्थ दाता है मानव की सचमुच मही,

राह दुनिया को सच्ची दिखाने लगे।
सच्चा मानव मनुज को बनाने लगे।

माँग क्या है जमाने की समझी-सुनी,
राह भारत के हित की है तुमने चुनी,
शान्ति से ही जमाने में समता चले,
हक़ जो वाजिब है सबका, वह सबको मिले,

भूमि सबकी है, सबको दिलाने लगे।
काम करना सभी को सिखाने लगे।

आज युग ने है भूखों की समझी जलन,
सुख मिलेगा तभी जब बढ़ेगा अमन,
खून मानव का सोना बनेगा नहीं,
अब तो शोषण से वैभव बढ़ेगा नहीं,

तुम तो हिंसा से जग को बचाने लगे।
बाँट रोटी सभी को दिलाने लगे।

कर्म करने को जोड़ी हैं तुमने लड़ी,
दान देने की महिमा है फिर से बढ़ी,
कर्ण से फिर मनुज तुम दिखाने लगे,
भूमि भारत की पावन बनाने लगे,

प्रेम-गंगा जगत में बहाने लगे।
तुम तो जीवन को गीता बनाने लगे।

तुम तो सोतों को उठकर जगाने लगे।
क्रान्ति का गीत गाकर सुनाने लगे।

नई सुबह का गीत

(कुमारी मधु)

हम भारत में नई सुबह के गीत सुनायेंगे ।

सूरज ने सोना बरसाया, चिड़ियाँ बोल रहीं,
जगा रही है हवा दिशाएँ, आँखें खोल रहीं ।
धरती से अंधियारा भागा, मिट्टी हँसती है,
हम भी सुख का सूरज बन दुख दूर भगायेंगे ।

फूल खिले डालों पर नीले, लाल, हरे, पीले,
झिलमिल करती ओस कि जैसे मोती चमकीले ।
रंग-बिरंगे फूलों-जैसा खिलकर, गंध उड़ा,
भारत की बगिया में हम मधुमास बुलायेंगे ।

नई सुबह को कोई बादल निगल नहीं जाए,
हरी-भरी धरती को पतझड़ लूट नहीं पाए ।
इसीलिए किरणों के सौ-सौ हाथ बढ़ाकर हम,
हर दुश्मन को खेल-खेल में मार गिरायेंगे ।

हम भारत में नई सुबह के गीत सुनायेंगे ।

वह तेरी मेहनत पर, किसान !

(सोहनलाल द्विवेदी)

शूरों-वीरों के बाहुदंड,
जिनमें अक्षय बल है प्रचंड,
ये प्रणवीरों के प्रण अखंड,
जो करते भूतल खंड-खंड।

ये योद्धाओं के धनुष-बाण,
ये वीरों के चम-चम कृपाण,
ये शूरों के विक्रम महान,
ये रणवीरों की विजय-तान।

वह तेरी दौलत पर, किसान !
वह तेरी मेहनत पर, किसान !
वह तेरी रहमत पर, किसान !
वह तेरी ताकत पर, किसान !

ये बड़े - बड़े प्राचीन किले,
जो महाकाल से नहीं हिले,
ये यशःस्तम्भ जो लौह ढले,
जिनमें वीरों के नाम लिखे।

ये आर्यों के आदर्श गान,
ये गुप्त-वंश की विजय-तान,
ये रजपूती जौहर अनाम,
ये मुग़ल-मराठों के बखान।

वह तेरी दौलत पर, किसान !
वह तेरी मेहनत पर, किसान !
वह तेरी हिम्मत पर, किसान !
वह तेरी जुर्रत पर, किसान !

इस भारत का सुखमय अतीत,
जिसकी सुधि अब भी है पुनीत;
इस वर्तमान के विभव गीत,
जिनमें मन का मधु संगृहीत,

आशाओं का सुख मूर्त्तिमान,
अरमानों का स्वर्णिम विहान,
प्रतिदिन,प्रतिपल की क्रिया,ध्यान,
उज्ज्वल भविष्य के तान-तान।

वह तेरी दौलत पर, किसान !
वह तेरी मेहनत पर, किसान !
वह तेरी हिम्मत पर, किसान !
वह तेरी ताकत पर, किसान !

वे बड़े-बड़े साम्राज्य-राज,
युग-युग से आते चले आज,
ये सिंहासन, ये तख्त-ताज,
ये किले, दुर्ग, गढ़, शस्त्र-साज।

इन राज्यों की ईंटें महान,
इन राज्यों की नींवें महान,

इनकी दीवारों की उठान,
इनकी प्राचीरों की उड़ान।

वह तेरी हड्डी पर, किसान!
वह तेरी पसली पर, किसान!
वह तेरी आँखों पर, किसान!
नस की ताँतों पर, रे किसान!

माँ ने तुझ पर आशा बाँधी,
तू दे अपने बल की कांधी,
ओ मलय पवन बन जा आंधी,
तुझसे ही गाँधी है गांधी,
तुझसे सुभाष है भासवान,
तुझसे मोती का बढ़ा मान,
तू ज्योति जवाहर की महान,
उड़ता नभ पर अपना निशान,
वह तेरी ताकत पर, किसान!
वह तेरी कुव्वत पर, किसान!
वह तेरी जुर्रत पर, किसान!
वह तेरी हिम्मत पर, किसान!
तू मदवालों से भाग-भाग,
सोये किसान, उठ! जाग-जाग!
निष्ठुर शासन में लगा आग,
गा महाक्रान्ति का अभय-राग!

रे, मर-मिटने की ठान-ठान,
ले स्वतन्त्रता का शुभ विहान।
गूँजे नभ-दिशि में एक तान—
जय जन्मभूमि! जय-जय किसान!

प्राणों का बलिदान नहीं कुछ

(शान्तिस्वरूप 'कुसुम')

प्राणों का बलिदान नहीं कुछ भारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

ये बर्फीले पर्वत जिसकी शान है,
दूर-दूर तक फैला रेगिस्तान है।
नित-वन्दित रत्नाकर चरण पखारता,
सबसे ऊँचा मेरा हिन्दुस्तान है।
फूलों का घर है, केसर की क्यारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

हैं ऊँची-नीची घाटी, मैदान हैं,
जगह-जगह पुरखों के अमर निशान हैं।
राम, कृष्ण के वंशज जिसमें घूमते,
वह मेरे अशोक का देश महान है।
षट् ऋतुएँ लेती जिसकी बलिहारी हैं,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

पाठ पढ़ाती अभिनव सीता-राम की,
पार्वती-शंकर की, राधा-श्याम की।
लक्ष्मी का इतिहास कि पन्ना की कथा,
नहीं किसी से तुलना मेरे धाम की।
मीरा है, मधुगीतों की फुलवारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

शान्ति-अहिंसा इसका मन्त्र विशेष है ,
गौतम, गांधी, महावीर सन्देश है ।
किन्तु न तिरछी आंखों इसे निहारना ,
दुनिया वालो ! यह सुभाष का देश है ।

लाल, जवाहर, मोती भरी पिटारी है ,
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

पोरस यहाँ न अपने प्रण को तोड़ता ,
चन्द्रगुप्त सपनों से नाता जोड़ता ।
पृथ्वीराज लिये गुण-गरिमा और ही ,
राणा कभी न रण से मुँह को मोड़ता ।

भामाशाह अचल यश का अधिकारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

अमरसिंह के स्वर-मिश्रित जयगान में ,
दीप जलाता है टोडर तूफान में ।
बन्दा की तस्वीर, शिवा की मूरतें ,
झूम-झूम जाती हैं नयन-वितान में ।

विक्रम की अम्लान धरोहर न्यारी है ,
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

गंगा-यमुना की धारा मनभावनी ,
तुलसी की रामायण, गीता पावनी ।
होली का त्योहार, दिवाली के दिये ,
मेघ-मल्हार कहाँ है ऐसी सावनी ?

सूरज, चांद, सितारों की उजियारी है ;
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

आबू की आभा हर उगते प्रात में ;
ताजमहल की सुषमा चंद्रिल रात में ।
लालकिला दिल्ली का माथे का तिलक,
खड़ी कुतुबमीनार, घटा बरसात में ।
ताल-तलैयों की रेशमी किनारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

गुण, गौरव-गाथायें उन्नत भाल है,
ऊपर है अम्बर, नीचे पाताल है ।
चमकीले दिवसों, रातों के हाथ में,
ज्यों कोई पावन पूजा का थाल है ।
होता किसका अर्चन, कौन पुजारी है ?
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

रूप-भरा ऐसा मधु का आंगन कहाँ ?
भोला-भोला-सा जन-जन जीवन कहाँ ?
घूम रहे हैं बजरे जिसकी झील में,
काश्मीर-सा हरा-भरा नन्दन कहाँ ?
रावी का तट लाता जहाँ खुमारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है ।

इसके अधरों पर गीतों का माल है,
कण्ठ-कण्ठ मुखरित संगीत विशाल है ।

आँखों में सुरमई डोर भूटान की,
प्यारा-प्यारा इसका दिल नेपाल है।
नृत्यों का जादू हर कुटी-अटारी है,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

मत सम्बल दिखलाओ हमें विवेक है,
शक्ति बहुत है हममें अपनी टेक है,
अलग न समझो, हम दुश्मन के वास्ते,
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन एक हैं।
अपनी राहें हमने स्वयं सवारी हैं,
भारत की आजादी हमको प्यारी है।

हम गा उठे !

(सत्यदेव शर्मा)

हम झूम-झूम गा उठे !

दिलों में एक चाह है, कठिन हमारी राह है,
हमारा लक्ष्य एक है, यही हमारी टेक है।
हों लाख आपदा भले, रुकें न हम, बढ़े चलें,
हम अपने को बना उठे, हम झूम-झूम.........

सबल हमारे गान हों, साहस-भरे ये प्राण हों,
हम अपनी आन के लिए, जीने की शान के लिए।
बढ़ेंगे हम, लड़ेंगे हम, जीवन सफल करेंगे हम,
हम देश को जगा उठे, हम झूम-झूम.........

कभी न हम निराश हों, न हार से हताश हों,
हमारे साँस-साँस में साहस के सौ विलास हों।
सदा अभय रहेंगे हम, न मृत्यु से डरेंगे हम,
हम हार को हटा उठे, हम झूम-झूम.........

विजय है सामने खड़ी, है मूल्यवान हर घड़ी,
खरी-खरी यह बात है, अजब हमारा ठाट है।
वीरों की यह जमात है, मुट्ठी में कायनात है,
हम अपना बल बढ़ा उठे, हम झूम-झूम.........

हमें है ध्यान लक्ष्य का, हमें सहारा सत्य का,
हम लीन अपने कर्म में, न दीन अपने धर्म में।
करेंगे हम, मरेंगे हम, पीछे न पग धरेंगे हम,
आगे जिसे बढ़ा उठे, हम झूम-झूम.........

बढ़े चलो ! भई, बढ़े चलो !

(रघुवीरशरण 'मित्र')

बढ़े चलो ! भई, बढ़े चलो !
कदम मिलाते बढ़े चलो !

तलवारों की धारों पर, शोर मचाते बढ़े चलो ।
बिजली के अंगारों पर, धार बहाते बढ़े चलो ।
तूफानों की छाती पर, दीप जलाते बढ़े चलो ।
गांधी जी की थाती पर, फूल खिलाते बढ़े चलो ।

चट्टानों पर बढ़े चलो ।
बढ़े चलो ! भई, बढ़े चलो !
कदम मिलाते बढ़े चलो ।

जैसे बादल चलता है, प्यास बुझाते बढ़े चलो ।
जैसे सूरज जलता है, ज्योति बिछाते बढ़े चलो ।
जैसे नदियाँ गाती हैं, तुम भी गाते बढ़े चलो ।
कलियाँ खुशबू लाती हैं, गन्ध लुटाते बढ़े चलो ।

हँसते - गाते बढ़े चलो !
बढ़े चलो ! भई, बढ़े चलो !
कदम मिलाते बढ़े चलो !

जाना तुम्हें कहाँ पर है ? जहाँ गरीबी रोती है ।
गाना तुम्हें कहाँ पर है ? जहाँ आँख में मोती है ।

जीत कहाँ किसको दोगे ? हार जहाँ पर रोती है ।

कदम कहाँ पर रोकोगे ? जीत जहाँ पर होती है ।

दु:ख मिटाते बढ़े चलो !

बढ़े चलो ! भई, बढ़े चलो !

कदम मिलाते बढ़े चलो ।

स्वतंत्र भारतीय जन

(हरिकृष्ण 'प्रेमी')

स्वतंत्र भारतीय जन,
स्वतंत्र भावना लिए,
स्वतंत्र पंथ पर चलो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

नवीन स्वप्न श्वास में,
उमंग में, हुलास में,
विकास की तलाश में,
मशाल-से जले चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

स्वतंत्र भारतीय जन,
स्वतंत्र भावना लिए,
स्वतंत्र पंथ पर चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

महान कामना लिए,
अपार लालसा लिए,
समृद्धि-लक्ष-सिद्धि के,
बहाव में बहे चलो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

स्वतंत्र भारतीय जन,
स्वतंत्र भावना लिए,

स्वतंत्र पंथ पर चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

सुदेश यह महान है,
महान ज्ञानवान है,
प्रबुद्ध शक्तिवान है,
सुमार्ग पर अड़े चलो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

स्वतंत्र भारतीय जन,
स्वतंत्र भावना लिए,
स्वतंत्र पंथ पर चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

देश पर आक्रमण

(हरिवंशराय बच्चन)

कटक संवार शत्रु देश पर चढ़ा ,
घमंड, घोर शोर से भरा बढ़ा ,
स्वतंत्र देश! उठ,इसे सबक सिखा ,
बहुत हुई
न देर अब
लगा जरा ।

समस्त शक्ति युद्ध में उंडेल दे ,
ग़नीम को पहाड़-पार ठेल दे ,
पहाड़ पंथ रोकता, ढकेल दे ,
बने नवीन
शौर्य की
परम्परा ।

न दे, न दे, न दे स्वदेश की भुई ,
जिसे कि नोक से दबा सके सुई ,
स्वतंत्र देश की प्रथम परख हुई ,
उतर खरा,
उतर खरा,
उतर खरा ।

गढ़, कारीगर, गढ़ !

(मदनमोहन परिहार)

गढ़, कारीगर, गढ़ !
आज देश के निर्माणों की नींव, बाँध के पत्थर गढ़ !!
गढ़, कारीगर, गढ़ !

चूर करो पर्वत, दूर करो अड़चन।
पथ बन जायेगा, श्रम कर दो अर्पण।
जुड़, कारीगर, जुड़ !
आज देश की मशीनरी में, तू भी इक पुर्जे-सा जुड़ !!
जुड़, कारीगर, जुड़ !

आज चलाओ हल, आज पिलाओ जल।
झूमेगी फसलें, मुस्कायेगा कल।
जड़, कारीगर, जड़ !
आज देश के खलिहानों में, बूँद पसीने की तू जड़ !!
जड़, कारीगर, जड़ !

मत लाचार रहो, मत बेकार रहो।
पास तुम्हारे बल, हर अंगार सहो।
बढ़, कारीगर, बढ़ !
आज देश के अभियानों में, तू भी तूफानों-सा बढ़ !!
बढ़, कारीगर, बढ़ !

आगे आओ—एक साथ

(ओंकारेश्वरदयाल नीरद)

आगे आओ — एक साथ।
कदम बढ़ाओ — एक साथ॥
फसलें खड़ी बुलाती हैं।

हरियल परिधानों पर ओढ़े चूनरी–
सरसों की वासन्ती खड़ी लजा रही,
पलकों में भावी के स्वप्न सुहावने–
अलकों पर खुशियों की छवि छितरा रही।

कदरा गाओ — एक साथ।
कदम बढ़ाओ — एक साथ।
फसलें खड़ी बुलाती हैं।

आशा का मधुमास छिटकता है कहीं–
बैठा एक किसान मेंढ पर गा रहा।
बैलों की गर्दन में घण्टी बज रही–
खलिहानों से मेहनत का स्वर आ रहा।

हिल-मिल जोतो — एक साथ।
मिल-जुल बोओ — एक साथ।
फसलें खड़ी बुलाती हैं।

खादी की ओढ़नी धनुष के रंग की,
ओढ़े पनघट पर जो वधु मुसका रही,
मदमाती-सी गाती कजली मोद में—
मेहनत की गागर छल-छल छलका रही।

संग - संग काटो—एक साथ।
हँस - हँस बाटो—एक साथ।
फसलें खड़ी बुलाती हैं।

चल अकेला, चल अकेला

(आरसीप्रसाद सिंह)

चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, चल रे ।
कोई तेरा साथ न दे तो, चल अकेला, चल रे ।।

पाँव जो बढ़ जायेंगे, तो राह भी मिल जायगी ।
ठोकरों से पैर की चट्टान भी हिल जायगी ।
हौसला अनुगामियों का पस्त, पथ सुनसान हो ।
कंटकों को पाँव से तू दल, अकेला दल रे ।
चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, चल रे ।
कोई तेरा साथ न दे, तो चल अकेला, चल रे ।।

देश है आजाद, उमड़ी जिन्दगी को ज्वार दे ।
चेतना का फूक दे जयशंख, फिर ललकार दे ।
शीत से भयभीत शीतल साथियों का रक्त हो ।
आप अपनी आग से तू जल अकेला, जल रे ।
चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला, चल रे ।
कोई तेरा साथ न दे, तो चल अकेला, चल रे ।।

श्रद्धांजलि

(कमला चौधरी)

स्मृति-पटल पर मस्तक नत कर उनके चरण पखारें।
जिनके पावन बलिदानों से आई लौट बहारें।

लक्ष्य-मार्ग पर एक सदी बलिदान हुए सेनानी,
सत्तावन से महिमामय इतिहास बना बलिदानी।
खड्ग हाथ ले रण में जूझी झाँसी वाली रानी,
धुन्धूपन्त, टोपिया, नाना औ' मैना कल्यानी।

जिन आहुति हित झनक उठी थीं झन-झन-झन तलवारें।
जिनके पावन...

रण-भेरी बजी दूसरी, युग महाक्रान्ति का आया,
लोकमान्य ने कारागृह में कर्म-काण्ड दुहराया।
'जन्म-सिद्ध अधिकार' मंत्र का सबको पाठ पढ़ाया,
सोई पीड़ित मानवता को चेतन किया, जगाया।

गूँज उठी पश्चिम तक जिनकी ओज-भरी ललकारें।
जिनके पावन...

विचलित देश हुआ, देखी जब सत्ता की मनमानी,
हृदय-रक्त वीरों का खौला, जगे आत्म-अभिमानी।
मोतीलाल, तिलक, नेताजी और गोखले ज्ञानी,
वीर लाजपत, अजमल आए देने को कुर्बानी।

फूट पड़ी जन-जन के मुख से ओज-भरी हुँकारें।
जिनके पावन...

सेनानी बन गांधी जी ने सत्याग्रह चलाया,
अपने अद्भुत चमत्कार से जग को चकित बनाया।
सत्य-अहिंसा को गति देकर शान्ति-समर रचवाया,
भारत के हर प्राणी को रण-कौशल नया सिखाया।

कारागार भरे, गूँजी हथकड़ियों की झंकारें।
जिन के पावन.................................

याद रहेगी बलि वीरों की, विपल्वकारी टोली,
खेल गये जो देश-मुक्ति हित लाल रक्त से होली।
भगतसिंह, 'आजाद', 'गुरु' औ' जलियाँवाली गोली,
जिनके साहस, देश-भक्ति पर चढ़ें फूल औ' रोली।

सींच गए स्वातन्त्र्य-बेलि को दे शोणित की धारें।
जिनके पावन.................................

शत-शत पीढ़ी पर्व मनायें, सदा करें अभिनन्दन,
राष्ट्रपिता के पद-चिह्नों पर चढ़े हृदय का चन्दन।
अमर रहे बापू की वाणी, धरा बने यह कंचन,
स्वप्न पूर्ण हो रामराज्य का, मिटें गरीबी, क्रन्दन।

राजघाट की शुचि समाधि पर नित-नित उन्हें जुहारें।
जिनके पावन.................................

हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं

(जगन्नाथ व्यास)

बंजर धरती में भी सुन्दर खेत हरे लहरा रहे ।
उन पर उड़ते हुए पखेरु, मंगल गायन गा रहे ।।
भारत का वैभव रहता है, खेतों में, खलिहान में ।
कहीं खेत पर कृषक गा रहा, मंद-मंद मुस्कान में ।।
हम धरती के वासी जग पर स्वर्ग लुटाते हैं ।
हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं ।।

आदिम यह व्यवसाय हमारा, खेती उत्तम काम है ।
जो जन-जन को जीवन देता, उत्तम वही किसान है ।।
उसकी मेहनत पर खुश होकर, बदली मोती वारती ।
शबनम की नव थाली लेकर, सुबह उतारे आरती ।।
मृगछौने-से धूल-भरे कुछ बालक गाते हैं ।
हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं ।।

उदित हुआ दिनमान त्यागकर काली चादर को ।
नया उजाला आज प्रकाशित करता घर-घर को ।।
उठो, लेखनी के हाथों में, वीरो, थाम कुदाल लो ।
नई योजना के अवसर पर, नये योग से काम लो ।।
हम उनमें हैं जो काँटों में फूल खिलाते हैं ।
हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं ।।

भरें विषमताओं के गड्ढे, समता का निर्माण हो।
जन-जन के मन में बस केवल जनता का कल्याण हो॥
देवों को तो परे छोड़ दो मानव पूज्य, महान हो।
तब देखेंगे कौन जगत में हम-जैसा धनवान हो॥
काम करो कुछ दिवस झूमते-गाते आते हैं।
हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं॥

हीरा, मोती, लाल, जवाहर, यहाँ उगलती धरती है।
जैसी धरती इस भारत की, ऐसी कहीं न धरती है॥
जो सब-कुछ सबको दे देती, अपने पास न धरती है।
थोड़ा ले, दे रही सौ गुना, सबका पालन करती है॥
इस धरती के शान्तिदूत हम, शान्ति मनाते हैं।
हम माटी के लाल धूल से रत्न उगाते हैं॥

सुबह हो शाम

(वीरेन्द्र शर्मा)

सुबह हो शाम,
बिना विश्राम—
चलो तो मंजिल आ जाये ।।

सभी पथ के आँधी-तूफान,
सभी के मन्दिर के भगवान।
जगाने हैं सोये—पाषाण,
रहेंगे फिर न कहीं वीरान।
नया हो गाँव,
तनिक हो छाँव,
सुहाना हर पथ मुसकाये।

रहे जीवन-भर मधुर बहार—
गीत की कोयल अधिक पुकार।
दुखी की ममता यहाँ दुलार,
सभी को जाना है उस पार।
लिए कुछ फूल,
न भूलें शूल,
कि जिससे पतझड़ शरमाये।

रात की यह पावन सौगात,
जगाती आकर नया प्रभात।

सजग होते हैं सोये पात,
सभी को होता है यह ज्ञात।
मिटाओ जलन,
मिटे कुछ तपन,
दीप हर सूरज बन जाये।

मिलन का हो हँसता आकाश,
विरह का हो न जहाँ आभास।
होंठ में हो गीतों की प्यास,
प्यास को हो ऐसा विश्वास।
पिया का द्वार,
मिलेगा प्यार,
जहाँ हर आँसू मुसकाये।

राष्ट्र-वन्दना

(वीरेन्द्र मिश्र)

तुझको हमारे करोड़ों प्रणाम ,
तेरे ही जादू की रचना है सारी ।
तेरे सवेरे ,
तेरी ही शाम ।

ये जो हिमालय से चलती हवाएँ ,
कृष्णा-कावेरी में उठती हिलोर ।
भारत ! तू जीवन की धड़कन है उनमें ,
जिनको भी बाँधे है प्राणों की डोर ।
गंगा है नयनों में ,
सागर है चरणों में ।
लहरों के मन्दिर में ,
पुजता है राम ।

तेरे चिनारों, कदम्बों की छाया,
तेरे पलाशों से हमको है प्यार ।
पर्वत से ऊँचे, सागर से गहरे ,
मस्तक में छाए हैं तेरे विचार ।
टेढ़े-मेढ़े पथ पर ,
आजादी के रथ पर ।
गिरते बटोही को ,
लेना तू थाम ।

शोणित पसीने ने कुर्बानी दी हैं,
पहनाया है तुझको मेहनत ने ताज।
देखेगा जो उसको खूनी नज़र से,
मिट्टी हो जाएगा उसका भी राज।
नदियों, पहाड़ों को,
बरखा, बहारों को।
बेचेंगे कैसे हम,
कोई भी दाम।
तुझको हमारे करोड़ों प्रणाम।

रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

(विश्वदेव शर्मा)

रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !
उठो कि तुम जवान हो, महान तेजवान हो !
कि अंधकार के लिये मशाल ज्योतिमान हो !
कि हर निशा नवीन स्वप्न आँख में बसा रही,
कि हर उषा नवीन सिद्धि जिन्दगी में ला रही।
बढ़ा कदम रुके नहीं, समुद्र हो भले अड़ा,
कि पर्वतों की चोटियों को रौंदते बढ़े चलो।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

मनुष्य है वही कि जो थमा नहीं, रुका नहीं,
झुका गगन भले मगर स्वयं कभी झुका नहीं।
कि जो गिरे हुओं को थाम कर उठा, चला सके,
कि जो महान स्वर्ग को जमीन पर बुला सके।
कि तुम मनुष्य हो ! उठो ! बढ़ो ! कि वक्ष तान लो !
कि अंधकार में प्रकाश बाँटते बढ़े चलो।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

नयी सुबह जगा रही, नया विकास हो रहा,
जगी नवीन जिन्दगी, विनाश मौन सो रहा।
कि बाँह आज खोलती नवीन राह लक्ष्य की,
कि भाग्यवाद की फिजां गुजर चुकी, सिमट चुकी।

उठो कुदाल थाम लो कि श्रम नवीन धर्म है—
उठो! जवान बढ़ चलो कि भाग्य खुद गढ़े चलो।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो!

मनुष्य है मरा तभी कि जब यकीन मर गया,
कि कल्पना मुरझ गयी, कि स्वप्न जब बिखर गया।
कि रूढ़ि ने दबा दिया कि जब मनुष्य का गला,
कि जब उसी की छाँह ने उसे भुला दिया, छला।
बढ़े चलो कि द्वार-द्वार प्यार तुम बिखेर दो!
तुम सहेज लो सुमन कि खार से लड़े चलो!
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो!

आज गा रहे सब जन गण मन

(मनमोहन सरल)

आज उमंगों की दीवाली,
बंदनवार सजी खुशहाली,
मोद-भरे दीपों की थाली, करती आज उछाह प्रसारण।

आज खेत में कंचन बरसा,
ताज पहनकर हल भी हरसा,
आज किसान स्वयं सुखकर-सा, करता मुदित समृद्धि का वितरण।

आज मगन मेंहदी की लाली,
हर्षभरी अंबुवा की डाली,
खुशी झूलती सावन वाली, सौरभ से भरती जन-प्रांगण।

आज शान्ति का बना बसेरा,
अणु-उद्‌जन का निकट न डेरा,
समता का अब स्वर्ण-सबेरा, फैलाता है सुखद समीरण।

आज गा रहे सब जन गण मन।

हमने अपने हाथों भाग्य बनाया है

(राष्ट्रबन्धु)

हमने अपने हाथों भाग्य बनाया है।
स्वयं जगे और सोया देश जगाया है।।

हमने जो श्रमदान किया, नहरें खोदीं,
सड़क बनाई, ऊसर में फसलें बो दीं।
बाँध बनाये गये, न रेगिस्तान रहें,
'करो मरो' का नारा हमने गाया है।
हमने अपने हाथों भाग्य बनाया है।।

हर दिन गाँवों में अब दीवाली होगी,
मील बनेंगे, गली-गली बिजली होगी।
नये हाथ निर्माण करेंगे नया-नया,
नयी योजनाओं का बाग लगाया है।
हमने अपने हाथों भाग्य बनाया है।।

दुनिया-भर के रहने वाले भाइयो!
सच्ची उन्नति करने वाले, साथियो!
'कदम मिलाकर चलो' शान्ति की ओर सभी,
लड़ने-भिड़ने से किसने क्या पाया है!
हमने अपने हाथों भाग्य बनाया है।।

सुनो हमारी कसम !

(ताराचन्द्र हारीत)

सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की ।
सत्य-अहिंसावादी बापू के प्रिय अमिट उसूल की ।
हमें कसम है नेता जी के त्याग और बलिदान की,
हमें कसम है नव भारत के नये राष्ट्र-निर्माण की ।
हमें कसम है सन् सत्तावन के अद्‌भुत तूफ़ान की,
बलिदानों के ढेर, खून से रंगे बाग जलियान की ।
हमें कसम है भगतसिंह की फाँसी वाली भूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की ।

कसम हमें अशफाकुल्ला-से भारत के परवानों की,
कसम हमें गोविन्दसिंह के उन नन्हे दीवानों की ।
कसम हमें आजाद हिन्द सेना के सिंह जवानों की,
भूखे-प्यासे रहकर भी उन गाये गये तरानों की ।
और कसम है हमें लोक के सेवक नवी रसूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की ।

गरज-गरजकर हमें बरजता भले कहीं तूफ़ान हो,
चाहे आग उगलता अणु बम का विध्वंसक गान हो ।
किन्तु न हमको भय छू पाये, होंठों पर मुस्कान हो,
लक्ष-लक्ष का एक लक्ष्य बस भारत का निर्माण हो ।
कर्म ध्येय हो, कर्म धर्म हो, छोड़ें बात फिजूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की ।

तन पर श्रम के मोती छिटकें, मन में भरी उमंग हो,
कोटि-कोटि कण्ठों से भारत का जयनारा संग हो।
भूख, ज़हालत, कंगाली से छिड़ी हमारी जंग हो,
सुन हुँकार हमारी जग से पराधीनता भंग हो।
सुख को बाँटें, काँटे छाँटें, गन्ध बिखेरें फूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की।

हममें से प्रत्येक जवाहर, देश-हितैषी बोस हो,
राजन बाबू की निश्छलता, लोकमान्य का जोश हो।
शान्ति-सुधा बरसायें, जग में रणचंडी खामोश हो,
मृत्यु-समय भी 'जयतु तिरंगा, जय भारत' उद्घोष हो।
अटल, अचल है कसम हमारी, समझो इसे न भूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की।

हममें से प्रयेक क़ौम के लिए प्राण को वार दे,
हममें से प्रत्येक देश को सीमा सुघड़ सँवार दे।
आक्रान्ता को, गरज सिंह-सा, विषधर-सा फुँकार दे,
और समृद्धि-शान्ति के पथ को पलकें बिछा बुहार दे।
प्रेम-क्षेम जग-भर को बाँटे, कसक न छोड़े शूल की,
सुनो हमारी कसम, कसम हमको भारत की धूल की।

नया जमाना

(मदनमोहन परिहार)

नया जमाना आया देखो बदल रहा संसार है,
दुनिया में हर मेहनतकश को जीने का अधिकार है।

जिनके हाथों में हल, खुरपी, दाँतल और कुदाली है,
जिनके तन से बहती रहती श्रम-गंगा मतवाली है।
जिनके पाँवों में बढ़ने की हलचल तूफानी-सी है,
जिनकी बाँहों में भिड़ने की ताकत फौलादी-सी है।
वे ही इस धरती के सच्चे मालिक, खिदमतगार हैं,
जिनके दम पर खड़ी हुई ये भारत की दीवार है।
दुनिया में हर मेहनतकश को जीने का अधिकार है॥

जिनके भुजबल से चलता नित टाँकी और हथौड़ा है,
जिनकी मेहनत ने जीवन को नई दिशा में मोड़ा है।
जिनकी आँखों में जगमग यह भारत की दीवाली है,
जिनके हाथों पनप रही यह धरती की खुशहाली है।
वे ही अब इस धरती के भागीरथ, इन्द्र, दिवाकर हैं,
जिनका खून-पसीना ही इस धरती का शृंगार है।
दुनिया में हर मेहनतकश को जीने का अधिकार है॥

एक बनें हम, नेक बनें हम

(कपिल)

एक बनें हम, नेक बनें हम,
नेक बनें हम, एक बनें हम।

एक रहे जो उन्हें मार्ग से कोई मोड़ नहीं पाया है,
एक हुए कच्चे धागों को कोई तोड़ नहीं पाया है,
बूँद-बूँद से धीरे-धीरे बड़े-बड़े घट भर जाते हैं,
नन्हे-नन्हे तिनके मिलकर चिड़ियों का घर रच जाते हैं,

रावण पनपे नहीं फूट का,
लक्ष्मण की-सी रेख बनें हम।
एक बनें हम, नेक बनें हम,
नेक बनें हम, एक बनें हम।

रेख खींच दें सत्कर्मों की, मानवता की लाज बचायें,
रेख खींच दें सदाचार की, जगती में सुख-सरित बहायें,
बरस उठे अमृत धरती पर, नभ में घटा प्रीत की छाये,
रेख खींच दें दावानल की, जिसमें द्वेष भस्म हो जाये,

दुर्ग ध्वंस करने दानव का,
मुड़े न ऐसी मेख बनें हम।
एक बनें हम, नेक बनें हम,
नेक बनें हम, एक बनें हम।

मेख गाड़ दें सत्य-धर्म की, सभी अहिंसा को अपनायें,
रोंद बढ़ चलें काँटों को भी, उन्नति के पथ में जो आयें,
मेख गाड़ दें ऐसी जिस पर इन्सानों का ध्वज लहराये,
मेख गाड़ दें उस सीमा तक, तनिक नहीं फिर हिलने पाये,

बन जाये इतिहास सुनहरा,
जीवन का वह लेख बनें हम ।
एक बनें हम, नेक बनें हम,
नेक बनें हम, एक बनें हम ।

लक्ष्मण की-सी रेख बनें हम ।
मुड़े न ऐसी मेख बनें हम ।

बन जाये इतिहास सुनहरा, जीवन का वह लेख बनें हम ।
एक बनें हम, नेक बनें हम, नेक बनें हम, एक बनें हम ।

राष्ट्र के लिये जियें

(जगन्नाथ व्यास)

राष्ट्र के लिए जियें, राष्ट्र के लिये मरें।
साधना के बन प्रदीप अन्धकार को हरें ॥

है वही महान व्यक्ति जो कि देशभक्त हो।
अर्चना में मातृभूमि की सदानुरक्त हो ॥
जो समस्त राष्ट्र में एक बन्धुता भरे।
राष्ट्र के समस्त कंटकों को दूर जो करे ॥
वह नहीं महान व्यक्ति, वह तो देववर्य रे ॥१॥

दीप क्या जो अन्धकार दूर भी न कर सके।
शक्ति क्या जो दुष्टता को चूर भी न कर सके ॥
वह घनावली नहीं जो वृष्टि भी न कर सके।
वह नहीं महीप जो न रम्य सृष्टि कर सके ॥
प्राणिमात्र बन्धुता के गीत को अलाप रे ॥२॥

क्या खिला बसन्त कोकिला मधुर न गा सके।
क्या खिले सुमन कि भृंग गन्ध भी न पा सके ॥
क्या बही नदी कि प्यास भी न जो बुझा सके।
क्या चला पथिक कि थाह राह की न पा सके ॥
कंटकों से ओत-प्रोत पंथ को निहार रे ॥३॥

जल रहे असंख्य दीप जगमगा रहा गगन ।
है इधर सुषुप्तिलीन दीपकों का शुभ्र मन ।।
खिल रहे सरोवरों में सैकड़ों कुमुद कमल ।
खिन्नता में डूबती रही इधर चहल-पहल ।।
शुष्क अस्थिपंजरों में नेह-धार डार रे ।।४।।

राष्ट्र के लिए जियें, राष्ट्र के लिए मरें ।
साधना के बन प्रदीप अन्धकार को हरें ।।

बढ़ाये जा कदम, जवान

(विनोद रस्तोगी)

बढ़ाये जा कदम जवान तू कदम बढ़ाये जा,
सुनाये जा खुशी के गीत तू जवान गाये जा।

जो आँधियों में बुझ नहीं सका वही चिराग तू,
जो बारिशों में दब नहीं सकी वही है आग तू।
कदम-कदम पै बिजलियाँ उछालता चला है तू,
बढ़े जा बाबरे दिखा न अपने दिल के दाग तू।

अँधेरी रात है मगर दिवालियाँ मनाये जा,
बढ़ाये जा कदम जवान तू कदम बढ़ाये जा।

तू चला तो चल दिया जमाना तेरे साथ-साथ,
तू रुका तो रुक गया फसाना तेरे साथ-साथ।
तू जला तो जल गये सितारे-आफताब-चाँद,
गा दिया तो छिड़ गया तराना तेरे साथ-साथ।

तू सुना प्रभातियाँ जवानियाँ जगाये जा,
बढ़ाये जा कदम जवान तू कदम बढ़ाये जा।

तू उठा तो उठ गया है देख नीला आसमान,
तू चढ़ा तो चढ़ गया है देख कितना यह जहान।
तू तना तो तन गया निकाल सीना है पहाड़,
तू जवान है इसी से देश तेरा है जवान।

बिजलियाँ गिराये जा तू आँधियाँ उठाये जा,
बढ़ाये जा कदम जवान तू कदम बढ़ाये जा।

प्राणों में ले भरो जवानी

(सुरेश सेठ)

प्राणों में ले भरी जवानी ,
उठ, आँधी बन जायेंगे ।
हम भारत के वीर सिपाही ,
अब जौहर दिखलायेंगे ।

हम दीवानों को अब कोई ,
पथ में आ मत टोकना ।
हमें मिली है आज चुनौती ,
बढ़ने से मत रोकना ।
अगले-पिछले सारे बदले ,
आज चुकाये जायेंगे ।

शंकर बनकर हमने अपने ,
सिर पर कफनो ओढ़ी है ।
विष पीने के पहले जग की ,
सारी ममता छोड़ी है ।
सोये सागर की लहरों में ,
फिर से ज्वार उठायेंगे ।

अब फिर से चित्तौड़-भूमि ,
रण का सन्देश सुनाती है ।
राणा की हल्दीघाटी भी ,
फिर से शंख बजाती है ।
हँसते-हँसते प्राण निछावर
वीरों के हो जायेंगे ।

जब तक हम जीवित हैं, कोई
कैसे आँख उठायेगा ?
लहराते खेतों को कोई,
कैसे धूल बनायेगा ?
दुश्मन के शोणित से अब हम ;
अपनी प्यास बुझायेंगे ।

तू जननी, तू जन्मभूमि है,
तेरी अमर कहानी है ।
धरती का यह मुकुट हिमालय,
तेरी अमिट निशानी है ।
कोटि-कोटि कण्ठों से हम सब,
तेरी महिमा गायेंगे ।

आगे बढ़े कदम...

(भरत व्यास)

आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े कदम।
जब तक तुम्हारी आस की मंजिल नहीं आये—
जब तक तुम्हारे भाग्य का पट खुल नहीं जाये,
तब तक न लो तुम दम, न लो तुम दम, न लो तुम दम।
आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े कदम।

हिन्दु हो, मुसलमान हो—यह छोड़ दो अहम्,
चलते ही चलो सामने, जब तक है दम में दम,
सौगन्ध तुम्हें राम की, अल्लाह की कसम।
आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े कदम।

तुमको तुम्हारे इस स्वतंत्र देश की कसम,
तुमको तुम्हारे इस स्वतंत्र वेश की कसम,
जालिम के जुल्म से जो घिस चुका है, पिस चुका।
तुमको तुम्हारे इस गुलाम 'शेष' की कसम।

स्वाधीनता की आन पे हँस-हँस जो मर मिटे,
खामोश उन शहीदों के बलिदान की कसम,
तुमको तुम्हारे मान की, अभिमान की कसम,
तुमको तुम्हारे गीता औ' कुरान की कसम।

जलियाँ वाले बाग के बलिदान की कसम,
है नौ अगस्त के अमर अभिमान की कसम,
पीछे अगर हटे कभी जो एक इंच भी,
तुमको तुम्हारे धर्म औ' ईमान की कसम।

पत्थर जो आये सामने, ठोकर से उड़ा दो,
चट्टान आये बीच में, छाती से हटा दो,
सीने पे चलें गोलियाँ औ' सिर पे गिरे बम,
आगे बढ़े, आगे बढ़े, आगे बढ़े कदम।

भालों की नोक सिर की टक्करों से मोड़ दो,
तोपों की नाल वज्र छातियों से तोड़ दो,
जुल्मों के सींखचों को बाँह से मरोड़ दो,
बनकर प्रलय दरो-दीवार दुर्ग फोड़ दो।

आजादी का चमन शिगुफ्ता खाद चाहिए,
तो वीर हड्डियों की इसमें खाद चाहिए,
प्यारा वतन अगर तुम्हें आजाद चाहिए,
लोहे को काटने को फिर फौलाद चाहिए।

आँखों में आग, जिन्दगी में ज्वाल चाहिए,
प्राणों में जूझ की लगन कराल चाहिए,
जादू न चाहिये, नहीं कमाल चाहिए,
बहादुरों के खून में उबाल चाहिए।

हर हिन्द के जवान को 'जयहिन्द' से हो प्यार,
हर हिन्द के जवान का 'जयहिन्द' हो शृंगार,
हर आँख में हो झूमता 'जयहिन्द' का खुमार,
हर साँस में हो गूँजती 'जयहिन्द' की पुकार।

राष्ट्र हेतु उत्कर्ष बनें हम

(राजेन्द्र 'राज')

कण-कण में साहस को भरकर,
नदी-वेग से नित्य उमड़कर,
जीवन में आदर्श बनें हम।

एक लक्ष्य हो, एक प्रेरणा,
मानवता का एक राग हो,
मेरा सबको, सबका मेरा,
ईश्वर के प्रति अमिट लाग हो।

यों जीवन में नेह बढ़ाकर,
उन्नति का सोपान चढ़ाकर,
भारत माँ का हर्ष बनें हम।

त्याग और सौन्दर्य सहज हो,
हर उर में हो लगन अटलतम,
हँसते - गाते, पैर बढ़ाते,
करें समस्या सहल जटिलतम।

बापू के चरणों पर चलकर,
गलकर, ढलकर, पलकर, जलकर,
राष्ट्र हेतु उत्कर्ष बनें हम।

झूमकर चलते रहेंगे

(शेरजंग गर्ग)

हम कठिन पथ पर समय के झूमकर चलते रहेंगे ।

आसमानों में लिखेंगे
हम कहानी जिन्दगी की ।
हर मृतक पर हम करेंगे
मेहरबानी जिन्दगी की ।।

जिन्दगी के गीत गाकर मृत्यु को छलते रहेंगे ।
हम कठिन पथ पर समय के झूमकर चलते रहेंगे ।।

रात को पीकर,
सवेरे को जगाना है हमीं ने ।
ज्योतिकरण लेकर,
अंधेरे को भगाना है हमीं ने ।।

हर तिमिरमय रास्ते पर सूर्य से जलते रहेंगे ।
हम कठिन पथ पर समय के झूमकर चलते रहेंगे ।।

हर विवश उर को सुनायेंगे,
खुशी की मुग्ध गाथा ।
खुदबखुद आकर झुकेगा,
मंजिलों का उच्च माथा ।।

देखकर बढ़ते हुए पग हिमशिखर गलते रहेंगे ।
हम कठिन पथ पर समय के झूमकर चलते रहेंगे ।।

चल, चल, चल !

(आरसीप्रसाद सिंह)

चल, चल, चल, चंचल दल, धीर चरण चल ।
दल के दल, तरुण चपल, निश्चल मन, चल ।।

अरुण किरण, गगन मगन, लहर-लहर नयी ।
मुक्ति मुखर, नव जागरण, तिमिर निशा गयी ।।

उन्नत सिर, भारत फिर, जागृत अविकल ।
चल, चल, चल, चंचल दल, धीर चरण, चल ।।

प्राण सबल, रुधिर नवल, शक्तिधर भुजा ।
जाग धवल, यात्री-दल, उठा जय-ध्वजा ।।

पंथ गहन, ज्योति वहन, पाँव हो अटल ।
दल के दल, तरुण चपल, निश्चल मन, चल ।।
चल, चल, चल, चंचल दल, धीर चरण, चल ।।

हम सब पुरुष महान बनेंगे

(निरंकारदेव सेवक)

एक बालक—

माँ, मैं राम-कृष्ण बन जाऊँ।

चौदह वर्ष वनों में घूमूँ, रावण मार लौट घर आऊँ।
अर्जुन का सारथी बनूँ मैं, गीता का उपदेश सुनाऊँ।
सूरदास का कृष्ण कन्हाई, तुलसी का श्रीराम कहाऊँ॥
माँ, मैं राम-कृष्ण बन जाऊँ।

दूसरा बालक—

माँ, मैं गौतम बुद्ध बनूँगा।

सात वर्ष बरगद के नीचे मैं भी कर दिन-रात तपस्या।
हल कर लूँगा इस दुनिया के दुख का कारण, मूल समस्या।
अपना चंचल मन वश में कर, मैं तन-मन से शुद्ध बनूँगा॥
माँ, मैं गौतम बुद्ध बनूँगा।

तीसरा बालक—

माँ, मैं वीर प्रताप बनूँगा।

अपनी आजादी की खातिर मैं जंगल-जंगल भटकूँगा।
किन्तु किसी अकबर के आगे जाकर माथा टेक न दूँगा।
भूखा तड़पा जिसका बच्चा, मैं वह पत्थर बाप बनूँगा॥
माँ, मैं वीर प्रताप बनूँगा।

चौथा बालक—

माँ, मैं दयानन्द बन जाऊँ।

पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण जा गढ़ पाखंडों के ढाऊँ।
सच्चा वैदिक धर्म बताकर मैं दुनिया को आर्य बनाऊँ।
जो मुझको विष देकर मारे, मैं उस पर भी दया दिखाऊँ॥
माँ, मैं दयानन्द बन जाऊँ।

पाँचवाँ बालक—

माँ, मैं वीर सुभाष बनूँगा।

घर-घर कही-सुनी जाती है जिसके यश की कथा-कहानी।
आजादी की बलिवेदी पर दे दी जिसने भेंट जवानी।
जो फिर भारत में आयेगा, मैं ऐसा विश्वास बनूँगा॥
माँ, मैं वीर सुभाष बनूँगा।

छठा बालक—

माँ, मैं भगतसिंह बन जाऊँ।

मेरे 'जय-जय-जय' बोले से ब्रिटिश ताज-सिंहासन डोले।
मेरा रोम-रोम मुख बनकर भारत माता की जय बोले।
माँ, मैं तेरे श्रीचरणों पर हँसकर अपना शीश चढ़ाऊँ॥
माँ, मैं भगतसिंह बन जाऊँ।

सातवाँ बालक—

माँ, मैं होकर बड़ा बनूँगा वीर चन्द्रशेखर आजाद।
कभी किसी के भी आगे मैं नहीं झुकाऊँ अपना माथ।

जीते-जी मेरे शरीर को दुश्मन लगा न पाये हाथ।
जो मुझको मारे, भारत में गूँजे उस गोली का नाद ॥
माँ, मैं होकर बड़ा बनूँगा वीर चन्द्रशेखर आजाद।

आठवाँ बालक—

माँ, यदि तू आशीष मुझे दे, मैं विद्यासागर बन जाऊँ।
मैं निर्धन कुल में जनमा हूं, इसकी कुछ परवाह न मुझको।
विद्या-धन के आगे वैसे धन की किंचित चाह न मुझको।
घर में तेल नहीं तो क्या दुख, पथ के दीपक से पढ़ आऊँ ॥
माँ, यदि तू आशीष मुझे दे, मैं विद्यासागर बन जाऊँ।

नवाँ बालक—

माँ, मैं गांधी बाबा बनकर भारत को आजाद करूँगा।
मेरा जीवन एक कहानी होगी सत्यों के अनुभव की।
मैं हिंसा के जादूघर में खैर मनाऊँगा मानव की।
सदा सत्य के लिये जिऊँगा और सत्य के लिए मरूँगा ॥
माँ, मैं गांधी बाबा बनकर भारत को आजाद करूँगा।

दसवाँ बालक—

कष्ट देश के दूर करूँ मैं बनकर वीर जवाहरलाल।
मुझे देश के हित की चिन्ता ऐसी लगी रहे दिन-रात।
सहन नहीं कर सकूँ कभी मैं देश-विरोधी कोई बात।
विश्व-शान्ति का दूत बनूँ मैं, भारत की रक्षा की ढाल ॥
दूर देश के कष्ट करूँ मैं बनकर वीर जवाहरलाल।

ग्यारहवाँ बालक—

माँ, भारत का लौह-पुरुष मैं वल्लभ भाई पटेल बनूँगा ।
मुझको मेरे दृढ़ निश्चय से कोई ताकत डिगा न पाये ।
जिसको मैं जैसा समझा दूँ वह बिलकुल वैसा हो जाये ।
मैं भारत के मानचित्र को नूतन रंगों से रंग दूँगा ।।
माँ, भारत का लौह-पुरुष मैं वल्लभ भाई पटेल बनूँगा ।

बारहवाँ बालक—

माँ, मैं होकर बड़ा बनूँगा देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद ।
हर कक्षा में पहले नम्बर होता जाऊँगा मैं पास ।
त्याग और तप के जीवन पर सदा करूँगा मैं विश्वास ।
ऊँचे से ऊँचा पद पाकर मुझे न होगा तनिक प्रमाद ।।
माँ, मैं होकर बड़ा बनूँगा देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद ।

तेरहवाँ बालक—

माँ, मैं जयप्रकाश नारायण बनकर नई चेतना भर दूँ ।
नई क्रान्ति का बिगुल बजाकर भारत का लेनिन कहलाऊँ ।
मैं जन-जन के अन्तरतम में सर्वोदय की ज्योति जगाऊँ ।
भारत को सच्ची आजादी देकर चमत्कार मैं कर दूँ ।।
माँ, मैं जयप्रकाश नारायण बनकर नई चेतना भर दूँ ।

सब बच्चे (मिलकर)—

हम सब पुरुष महान बनेंगे ।

एक बालक—

अभी तुम्हें लगते हैं छोटे,
तुम कहते हो हम हैं खोटे।

दूसरा बालक—

किन्तु एक दिन पढ़-लिखकर हम बहुत बड़े विद्वान बनेंगे ।।

सब बालक—

हम सब पुरुष महान बनेंगे।

एक बालक—

काम बुद्धि से अपनी लेकर,
आदर-मान बड़ों को देकर।

दूसरा बालक—

हम अपने कुल-देश-धर्म के दुनिया में अभिमान बनेंगे ।।

सब बालक—

हम सब पुरुष महान बनेंगे।

एक बालक—

काम करेंगे हम कुछ ऐसे,
कभी किसी ने किये न जैसे।

दूसरा बालक—

नहीं देवताओं की प्रतिमा, जिन्दादिल इन्सान बनेंगे ।।

सब बालक—

हम सब पुरुष महान बनेंगे।

प्यारा हिन्दुस्तान

(ताराचन्द्र हारीत)

जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान ।

यह हम सबकी मातृभूमि प्रिय, हम इसकी सन्तान,
सुन-सुन लोरी इसी भूमि की जागा यह संसार,
कोने-कोने में भूतल के हमने किया विहार,
दिया विश्व को इसी भूमि ने गौतम बुद्ध महान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान ।

कोई लालच-भरी दृष्टि से देखे इसे न भूल,
केशर-चन्द्रन से भी बढ़कर हमको इसकी धूल,
कण-कण पर इसके न्योछावर कर देंगे हम प्राण,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान ।

हैं निर्माण-मग्न हम, सबके लिए हृदय में प्रीति,
शस्त्रों की इस चमक-दमक से हमें न होती भीति,
कोटि-कोटि हाथों में रक्षित भारत माँ की शान,
जग से प्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान ।

सह अस्तित्व हमारा नारा, पंचशील उद्घोष,
अभय तिरंगा लहर-लहरकर भरता हममें जोश,
सुधा-शान्ति हम बरसाते हैं, कर भय-विष का पान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान ।

कश्मीरी कुंकुम से देता तिलक भाल पर इन्दु,
गंगा-यमुना का जल लेकर पाँव पखारे सिन्धु,
दक्षिण भुज वह सबल-सजग है प्रहरी राजस्थान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान।

इसी भूमि पर खेले राणा और शिवाजी फाग,
इसे खून से सींच चुका है जलियाँ वाला बाग,
भला इसे फिर क्या हम हो जाने देंगे वीरान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान।

राष्ट्र-पताका की रक्षा में हैं समर्थ ये हाथ,
पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—कदम उठाएँ साथ,
छिन्न-भिन्न जिनसे टकराकर हो जाएँ तूफान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान।

वीर जवाहर सेनानी है, हम सब उसके वीर,
पूरी करें उसे जो उनके भारत की तस्वीर,
लहर तिरंगे, अभय लहर तू, हम गाएँ जयगान,
जग से न्यारा देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान।

जन-गण-मन की भारती

(मदनमोहन परिहार)

जन-गण-मन की भारती, धरती तुझे पुकारती,
जाग मुसाफिर, आई किरणें तेरी ओर निहारती।

बाँझ पड़ी है धरती माता, बंजरता का ओढ़ दुशाला,
सूख गया है दूध होंठ का, खाली है आँचल का प्याला।

बादल को तुम चीर दो, धरती को तुम नीर दो,
माटी को तुम बीज दो, मानव को तदबीर दो।
सूखी खेती लाजती, पतझड़ से तन ढाँकती,
उठो लाडलो! माता तुमसे बीज-पसीना माँगती।
जाग मुसाफिर, आई किरणें तेरी ओर निहारती॥

माँग रहा है देश हमारा हमसे एहसानों का बदला,
तुझे सजाना होगा फसलों से यह भारत रंग-रंगीला।

ताकत को तुम बाँध लो हिम्मत से तुम काम लो,
दूर न हो जब तक बेकारी, तब तक मत विश्राम लो।
ऊसर को भी प्राण दो, आओ साधन दान दो,
खेत-खेत में झूमेगी फिर, फसलें हँसती नाचती।
जाग मुसाफिर, आई किरणें तेरी ओर निहारती॥

हम धरती मां का आज नया इतिहास बनायेंगे

(मदन विरक्त)

हम धरती माँ का आज नया इतिहास बनायेंगे।
हम करके नव-निर्माण राष्ट्र का भाग्य जगायेंगे॥

धरती माता सबकी माता,
हम सबका है इससे नाता,

हम खलिहानों के बीच आज सोना उपजायेंगे।
हम धरती माँ का आज नया इतिहास बनायेंगे॥

सत्य-अहिंसा का निर्माता,
रामराज्य का शंख बजाता,

हम मानवता का, द्वार-द्वार जा पाठ पढ़ायेंगे।
हम धरती माँ का आज नया इतिहास बनायेंगे॥

नया-नया संसार बसेगा,
मानवीय अधिकार जगेगा,

हम धरती माँ के पूत धरा को स्वर्ग बनायेंगे।
हम धरती माँ का आज नया इतिहास बनायेंगे॥

चलो, खेत में रोपें धान

(हीरादेवी चतुर्वेदी)

चलो, खेत में रोपें धान,
हम भारत के तरुण किसान।

बरस रहा है पानी छमछम,
गरज रही मेघों की माला।
सायँ-सायँ कर पवन सुनाता,
श्रम का जीवन-गीत निराला।

काँप रहा तन, हँसते प्रान;
चलो, खेत में रोपें धान।

गरमी आती, नभ से सूरज
इस धरती पर आग जलाता।
सन-सन, सन-सन पवन भयंकर
लू के तीखे तीर चलाता।

फिर भी रुकता नहीं किसान;
चलो, खेत में रोपें धान।

गरमी में या तेज शीत में,
घबराते जब सबके प्रान।
बहा पसीना खेतों में तब,
हम किसान देते श्रमदान।

तब यह पलता हिन्दुस्तान;
चलो, खेत में रोपें धान।

हम एक थे, हम एक हैं

(सरस्वतीकुमार 'दीपक')

हम एक थे ,
हम एक हैं ,
हम एक रहेंगे ।

यह सदियों की आवाज़ है ,
यह पूजा, यह नमाज़ है ;
यह आजादी का राज़ है–
दुनिया से कहेंगे ।
हम एक थे ,
हम एक हैं ,
हम एक रहेंगे ।

यह मन्दिरों के, मस्जिदों के नारे कहेंगे ,
गिरजे ये कहेंगे, यही गुरुद्वारे कहेंगे ,
हम हिन्दू-मुसलमान नहीं न्यारे रहेंगे ।
हम एक थे ,
हम एक हैं ,
हम एक रहेंगे ।

समय प्रभाती, गीत सुनाती

(सुरेश शुक्ल)

समय प्रभाती,
गीत सुनाती,
सुन्दर स्वर्ण विहान के।
गीत नये दिनमान के।

डालों पर बैठे पंछी गाने लगे,
त्याग खुमारी सपन दूर जाने लगे,
शोर मचाती आती गाती भोर है,
यह सन्देश अरुण लेकर आने लगे।

किरण निहारें,
स्वर झंकारे,
आज नये आह्वान के।
जीवन के निर्माण के।

पात-पात मस्ती में देखो झूमता,
फूल-फूल का मुखड़ा भँवरा चूमता,
कलियाँ गीत बहारों के गाने लगीं,
पवन पहरुआ गली-गली में घूमता।

सौरभ सरसे,
मन में हरषे,
फूल-फूल उद्यान के।
सुन्दर सुखद वितान के।

खेतों का माली बैलों के साथ में,
जाता हल औ' फाली ले निज हाथ में,
पूरब का वासी उसकी जय बोलता,
उषा लगाती रोली उसके माथ में।

माटी गाये,
फसल उगाये,
है श्रम-बिन्दु किसान के।
भाग जगे खलिहान के।

हम किशोर हैं भारतवर्ष महान के !

(गोपाल बाबू शर्मा)

हम किशोर हैं भारतवर्ष महान् के !
भुजा फड़कती, पाँवों में गति डोलती—
सिर ऊँचा कर चलते सीना तान के !

पथ में पर्वत पड़ते, पर हम राह बनाते हैं,
गहरे सागर लहराते, हम थाह लगाते हैं।
घने तिमिर को हिम्मत की किरणों से रोका है,
काँटों में हम मुसकानों के फूल खिलाते हैं।

मान मारते हैं आँधी-तूफान के !

मातृभूमि की आशा हैं, विश्वास अमर भी हैं,
नये स्वरों के गायक हम अलमस्त भ्रमर भी हैं।
मित्रों पर सर्वस्व निछावर हम करते आये,
किन्तु शत्रु के लिए सदा से महासमर भी हैं।

व्रतधारी हम, पक्के अपनी आन के !

दीन-दुखी, असहायों के हम सबल सहारे हैं,
भूली-भटकी हुई लहर के लिए किनारे हैं।
कभी न बुझने वाले हम दीपक झोंपड़ियों के,
प्यासे मरु के लिए सजल बादल कजरारे हैं।

बिछुड़े हृदय मिलाते हैं इन्सान के !

हिन्दुस्तान हमारा

(शान्तिस्वरूप 'कुसुम')

हिन्द हमारा, स्थान हमारा,
हिन्दुस्थान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा।

साँझ भटकते तूफ़ानों में,
बढ़े चलें हम, बढ़े चलें हम।
रात उलझते सुनसानों में,
अड़े चलें हम, अड़े चलें हम।

हमने भोर जगाई,
तम से होड़ लगाई।

दीप्ति हमारी, भानु हमारा,
स्वर्ण-विहान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा।

गर्म लहू से यह फुलवारी,
किसने सींची किसने सींची?
आज़ादी की उज्ज्वल रेखा,
किसने खींची, किसने खींची?

देश अभेद्य रहेगा,
बनकर एक रहेगा।

ध्येय हमारा, ध्यान हमारा,
लक्ष्य महान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा।

कदम मिलाते गाते जाते,
वीर सिपाही, वीर सिपाही।
दुश्मन के हित बनकर आते,
एक तबाही, एक तबाही।

हमने बाजी जीती,
बीत गयी सो बीती।

पिकी हमारी, गान हमारा,
हर्षोद्यान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा।

गांधी की जय, तिलक-गोखले,
वीर जवाहर, वीर जवाहर,
चन्द्र-भानु-से चमक रहे हैं,
अगणित नाहर, अगणित नाहर।

हमने रात गुजारी,
देखी है भिनसारी।

सत्य हमारा, ज्ञान हमारा,
स्वप्न-वितान हमारा,
हिन्दुस्तान हमारा।

[प्रतिनिधि सामूहिक गान

खड़ा हिमालय उफ़न रहा है,

जलधि तरंगा, जलधि तरंगा।

वेदमन्त्र आचार बताती,

पावन गंगा, पावन गंगा।

ऋषियों की जयकारें,

पूजा की झनकारें।

देश हमारा, मान हमारा,

एक गुमान हमारा,

हिन्दुस्तान हमारा।

हिन्द हमारा, स्थान हमारा,

हिन्दुस्थान हमारा,

हिन्दुस्तान हमारा।

भारत भाग्य-विधाता

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य-विधाता !

पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल, बंगा,
विंध्य, हिमालय, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि-तरंगा।

तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे,
गाये तव जय-गाथा,
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य-विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे !